ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 25 फरवरी 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 25 फरवरी 2018 से 03 मार्च 2018

फाल्गुन शु.– 10 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 59, अंक 08, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने अखिल भारतीय वैदिक संगीत संगोष्ठी आयोजित कर मनाया ऋषि जन्मोत्सव

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस पर अखिल भारतीय वैदिक संगीत गोष्ठी का आयोजन 9,10 एवं 11 फरवरी 2018 को समारोहपूर्वक किया गया, जिसमें 94 डी.ए.वी. स्कूलों के 113 संगीत अध्यापकों ने भाग लेकर वैदिक भजनों और गीतों की प्रस्तुति दी। तीनों दिन यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें सभा के पदाधिकारियों एवं पधारे हुए प्रतियोगियों ने भाग लिया। तीन दिन तक चली प्रतियोगिता के समापन सत्र के अध्यक्ष श्री प्रबोध महाजन, उपप्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली ने संगीत शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैदिक विचारों और सिद्धान्तों से परिपूर्ण गीतों और भजनों के

माध्यम से प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायें। इसके लिए यह ज़रूरी है कि अध्यापक स्वयं आर्य समाज के विचारों और सिद्धान्तों से परिचित हों, जिससे वे विद्यार्थियों में वैदिक मूल्यों की स्थापना करने में समर्थ हो सकें।

इस प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसरों प्रो. उमा गर्ग, डॉ हरीश तिवारी एवं प्रो. शैलेन्द्र गोस्वामी को निर्णायक के रूप में आमन्त्रित किया था।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

डी.ए.वी. मुरलीधर, अम्बाला शहर के वार्षिकोत्सव पर छः लाख की छात्रवृत्तियाँ दी गईं

मुरलीधर डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल में वार्षिकोत्सव का दूसरे चरण मल्हार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एम.सी. शर्मा (कोषाध्यक्ष डी.ए.वी. सी.एम.सी., नई दिल्ली) तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. सुषमा आर्य (रीजनल डायरेक्टर, पब्लिक स्कूल हरियाणा) रहे।

कार्यक्रम का आरम्भ मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट ने दीप प्रज्ज्वलित करके गायत्री मन्त्र के उच्चारण किया गया तत्पश्चात् सरस्वती वंदना की गई। स्कूल मैनेजर डॉ. विवेक कोहली ने मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि के स्वागत अभिभाषण में आभार व्यक्त किया। प्राचार्य डॉ. आर आर सूरी ने विद्यालय की वर्षभर की उपलब्धियों का लेखा जोखा दिया। कार्यक्रम में छात्रों द्वारा देशभक्ति, भाईचारा, आपसी सहयोग एवं नैतिक मूल्यों का भी सन्देश अपनी प्रस्तुतियों द्वारा दिया। वन्दे मातरम, स्वीट स्विंग ऑफ अम्ब्रेला, पंजाबी डांस, लोकनृत्य भी दर्शको के आकर्षण के केन्द्र रहे।

इस अवसर पर गत वर्ष 10 CGPA अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होने वाले, 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने और प्रोफेशनल कॉलेजस में दाखिला पाने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। विद्यार्थियों को कुल 6 लाख की छात्रवृतियाँ प्रदान की गई। 13 विद्यार्थियों को खेलों में विशेष उपलब्धि पुरस्कार दिए गए। विशिष्ट अतिथि डॉ. सुषमा आर्य ने विद्यालय की उपलब्धि की सराहना करते हुए प्राचार्य को बधाई दी।

मुख्य अतिथि द्वारा स्कूल समाचार पत्रिका रिफ्लेक्शन का भी विमोचन किया गया जिसमें स्कूल के 6 महीनों के कार्यक्रमों तथा क्रियाकलापों का ब्यौरा दिया गया स्कूल प्रबंधक समिति के सदस्यों ने स्कूल प्राचार्य, अध्यापकगण, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों को शुभकामनाएँ दीं।

डी.ए.वी. सेक्टर-14, फरीदाबाद में ऋषि दयानन्द जन्मदिवस व बोध-उत्सव सोल्लास सम्पन्न

आर्य समाज डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर–14, फरीदाबाद के प्राइमरी भवन में नव निर्मित पवित्र यज्ञशाला में व प्रवचन एवं भजन के माध्यम से ऋषिवर दयानन्द सरस्वती जी का 194वाँ जन्मदिवस तथा बोधोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर सभी शिक्षकों ने सोल्लास सम्मिलित यज्ञ करते हुए ईश्वर से समस्त मानवता की भलाई हेतु आहुतियाँ डालीं और प्रार्थना की।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 25 फरवरी 2018 से 03 मार्च 2018

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति जिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अङ्ग**) हे, (**अमूर**) अमूढ़, (**चिकित्वः**) ज्ञानी, (**अग्ने**) परमेश्वर!, (**मूराः**) मूढ़, (**वयं**) हम, (**महित्वं**) महत्ता को, (**न**) नहीं [जान पाते]।, (**त्वं**) तू, (**वित्से**) जानता है। [हमारा], (**वव्रिः**) रूपवान् आत्मा, (**शये**) सोया पड़ा है, (**जिह्वया**) जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, (**अदन्**) भोग करता हुआ, (**चरति**) विचरता है, (**विश्पतिः सन्**) राजा होता हुआ [भी], (**युवतिं**) प्रकृति–रूप युवति को, (**रेरिह्यते**) अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनााया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने "मिलकर रहिए! बाँटकर खाइए!" पर कथा सुनाते हुए कहा कि संसार में रहने का ठीक ढंग यह है कि प्रभु ने जो कुछ दिया है, उसे बाँटकर खाओ, त्याग भाव से भोग करो और इसके साथ ही साथ भगवान से भी प्यार करो। उसके नाम का जप करो और उसका ध्यान करो। "सिद्धि का मूल्य–केवल चार आने" पर कथा सुनाते हुए कहा सब सिद्धियाँ ईश्वर–प्राप्ति में विघ्न हैं, प्रभु दर्शन के मार्ग में रूकावट है, केवल सांसारिक सफलता है यह, आत्मा को प्राप्त करने का मार्ग नहीं। "सच्चे गुरु की पहचान" पर कथा सुनाते हुए कहा मनुष्य को देखभाल कर ऐसे व्यक्ति को गुरु बनाना चाहिए जो क्रोधी न हो।

–आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

एक नहीं, दो कफन तैयार रखिये!

इस जीवन के तत्व 'ब्रह्मचर्य' के रहस्य को यूनान (ग्रीस) के महात्मा सुकरात (सॉक्रेटीज़) ने भी समझा था। एक बार स्त्री–पुरुष के सहवास के सम्बन्ध में एक शिष्य ने सुकरात से पूछा– ''पुरूष को स्त्री प्रसंग कितनी बार करना उचित है?''

सुकरात–''जीवन–भर में केवल एक बार।''

शिष्य–''यदि इससे सन्तुष्ट न हो सके, तो?''

सुकरात– ''प्रति वर्ष एक बार।''

शिष्य– ''यदि इससे भी सन्तुष्ट न हो, तो?''

सुकरात–''फिर महीने में एक बार।''

शिष्य– ''इससे भी मन न भरे, तो?।''

सुकरात–'' तो महीने में दो बार कर लें, परन्तु मृत्यु शीघ्र आ जायेगी।''

शिष्य–'' इतने पर भी इच्छा बनी रहे, तब क्या करें?''

सुकरात–''फिर ऐसा करें कि पहले कफन लाकर घर में रख लें, फिर जो इच्छा हो करें।''

इस तथ्य की बात में इतना ही बढ़ाना है कि एक नहीं, दो कफन मँगवाकर रख लेने चाहिएं। यह निश्चित जानिये कि जिसने अपने–आपको सँभालकर रखा और लोक–परलोक दोनों का सुख देने वाले वीर्य–रत्न को जिसने व्यर्थ नहीं गँवाया वह सदा प्रसन्नचित रहेगा। उसमें सामर्थ्य आयेगी और वह हर क्षेत्र में विजयी होगा।

मानव–जीवन का उद्देश्य

एक व्यक्ति बाज़ार से दो बड़ी लकड़ियाँ खरीदता है और दो छोटी। चार पावे खरीदता है, कुछ सूत्री। सबको इकट्ठा करके बुनना शुरू करता है। उससे पूछिये कि ''यह सब–कुछ क्यों कर रहे हो?'' तो वह कहेगा– ''चारपाई बना रहा हूँ।''

पूछिये–''चारपाई बनाकर क्या करेगा?''

वह कहेगा–''सोऊँगा।''

यह ठीक उत्तर है। छोटी–सी चारपाई का उद्देश्य हम जान सकते हैं। इतने बड़े मानव–जीवन के उद्देश्य का ही पता नहीं।

व्रत का अर्थ–वचन का पालन

एक थी बूढ़ी माँ। चार उसके बेटे थे। एक दिन बूढ़ी माँ ने व्रत रखा। बड़े बेटे ने सोचा–'माँ ने व्रत रखा है, उसके लिए कुछ भेजना चाहिये।' दो दर्जन चित्ती वाले केले उसने भेज दिये।

दूसरे पुत्र ने सोचा–'माँ ने व्रत रखा है, अन्न तो वह खा नहीं सकती।' उसने डेढ़ सेर दूध भेज दिया।

तीसरे पुत्र ने सिंघाड़े के आटे से बने हुए एक सेर पकौड़े भेज दिये। चौथे पुत्र ने फलों का एक टोकरा भेज दिया।

रात्रि में चारों पुत्र माँ के पास पहुँचे तो बड़े लड़के ने कहा– ''माँ, तुझे दो दर्जन केले भेजे थे मैंने?''

माँ ने कहा–''हाँ बेटा! वे मैंने सब खा लिये, मेरा व्रत है न! रोटी तो मैं खा नहीं सकती।''

दूसरे पुत्र ने कहा– ''माँ, मैंने डेढ़ सेर दूध भेजा था?''

माँ ने कहा– '' हाँ पुत्र! वह मैंने सब पी लिया।''.

तीसरे पुत्र ने कहा– ''माँ, मैंने पकौड़े भेजे थे?'',

माँ बोली–'' हाँ बच्चा! अच्छे थे पकौड़े। मैंने खा लिये।''

चौथे पुत्र ने कहा–''परन्तु माँ! फलों का वह टोकरा तो होगा, जो मैंने भेजा था?''

माँ बोली–''कहाँ बेटा! मैंने वह सारा टोकरा समाप्त कर दिया, मेरा व्रत जो था!''

बड़े बेटे ने यह बात सुनी तो दौड़ा हुआ मकान की छत पर पहुँचा और पुकार–पुकारकर कहने लगा–''ओ मुहल्ले वालो! अपने–अपने बच्चों को सँभालकर रखना, हमारी माँ ने व्रत रखा हुआ है।''

नहीं, यह व्रत नहीं है। व्रत का अर्थ यह है कि जो वचन मैंने किया है, उसे जीवन–भर पूर्ण करूँगा। व्रत का अर्थ भूखों मरना भी नहीं।

क्रमशः

तीन सन्धियों से गुज़रने वाला सुक्रतु

● महात्मा चैतन्यस्वामी

क्रतु का अर्थ है कर्म करने वाला अर्थात् व्यक्ति को सदा कर्मशील बने रहना चाहिए। वेद हमें यही प्रेरणा देता है–**ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत्समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।** (यजु.40–2) हे मनुष्य। (इह) इस लोक में (कर्माणि कुर्वन् एव) कर्मों को करते हुए ही तूने जीना है, **(शतं समाः जिजीविषेत्)** तू सौ वर्ष जीने की कामना कर, **(एवं त्वयि इतः अन्यथा अस्ति)** कर्म करते हुए सौ वर्ष जीना ही तेरे जीवन का एकमात्र नियम है, और कोई अन्य नियम नहीं मगर **(न कर्म निप्यते नरे)** इन कर्मों में उलझ नहीं जाना बल्कि विरत होकर सदा कर्मशील बने रहना। जीव कर्म करनमें तो स्वतंत्र है मगर फल भोगने में वह परतंत्र है क्योंकि कर्मों का फल तो न्यायकारी परमात्मा ने देना है। इसलिए इस कर्म स्वतंत्रता का लाभ उठाकर सदा कर्मशील बने रहना चाहिए और ये कर्म निष्कामभाव से करने चाहिए। यजुर्वेद में ही अन्यत्र जीव को क्रतु कहा है–**ओ३म् क्रतो स्मर** (यजु. 40–15)। श्री कृष्ण जी भी कहते हैं–**अहं क्रतुरहं यज्ञः** (गीता 9–16)। गीता में अन्यत्र यह भी कहा गया है कि बिना कर्म के तो व्यक्ति एक क्षण के लिए भी नहीं रह सकता है। अतः कर्म तो करने ही है मगर यदि व्यक्ति के द्वारा पुण्यकर्म किए जाएं तो इससे वह निष्काम–कर्मी और सुक्रतु बन जाता है। वेद में सुक्रतु बनने की प्रेरणा दी गई और साथ ही प्रक्रिया बताई गई है–

ओ३म् त्रिणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वैरयद्रयिम्। मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः।। (सा. 1015) मंत्र में सुक्रतु बनने के लिए मुख्यतः पहली बात कही गई कि–**त्रिणि त्रितस्य धारया,** जो व्यक्ति जीवन में तीन बातों को धारण कर लेता है, वह सुक्रतु बन जाता है। ऐसी बहुत सी तीन बातें हैं मगर यहाँ हम कठोपनिषद् के उस प्रसंग की चर्चा करना चाहेंगे जहां नचिकेता यमाचार्य से स्वर्ग प्राप्ति का वर मांगता है और आचार्य उससे कहता है–**त्रिणाचिकेतास्त्रिभिरेत्य सन्धि त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू। ब्रम्हज(य) ज्ञं देवमीडय्यं विदित्वा निचाय्येयाँ शान्तिमत्यन्तमेति।।**(कठोपनिषद् 1–17) यहां पर यमाचार्य ने आश्रम–व्यवस्थारूपी तीन सन्धियों की चर्चा की है। पांचवें समुल्लास का आरंभ करते हुए महर्षि दयानन्दजी (शत.कां.14) लिखते हैं–'**ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेत् गृही भूत्वा वनी भवेद, वनी भूत्वा प्रव्रजेत्।।** मनुष्यों को उचित है कि ब्रह्मचर्याश्रम को समाप्त करके गृहस्थ होकर वानप्रस्थ और वानप्रस्थ होके सन्यासी होवें, अर्थात् यह अनुक्रम से आश्रम का विधान है।' इन पंक्तियों से साफ पता चलता है कि महर्षिजी क्रमिक रूप से व्यक्ति की उन्नति चाहते थे और इसका आधार उन्होंने आश्रम–व्यवस्था को ही बताया है। यमाचार्य जी भी नचिकेता से बही बात कह रहे हैं कि यदि व्यक्ति स्वर्ग अर्थात् सुख चाहता है तो उसे चार आश्रमों की तीन सन्धियों में से गुजरना होगा। वैदिक धर्म की विलक्षणता एवं श्रेष्ठता यह है कि इसमें मानव–जीवन के समग्र एवं पूर्ण विकास की संभावनाएं हैं। हमारे मनीषियों ने व्यक्ति की औसत आयु सौ वर्ष मानकर उसे चार बराबर भागों में बांटा है। इन्हें ही क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम कहा जाता है।

प्रथम पच्चीस वर्षों को व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों के विकास का समय माना है। इसी का नाम ब्रह्मचर्य आश्रम है। ब्रह्मचारी का मुख्य लक्ष्य शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास करना है। इस आयु में उसे सब प्रकार के दूषित वातावरण से दूर रखकर गुरुकुलों में गुरु की शरण में रखा जाता था। उसे मन, वचन और कर्म से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना होता था। यह बात बिल्कुल सत्य है कि अपने जीवन की आयु के इस भाग में व्यक्ति जो कुछ सीखता है जीवन के शेष भाग में अधिकतर उन्हीं संस्कारों का विकास होता है। यह आश्रम मानों उस भवन की नींव है जिसका आगे के जीवन में निर्माण होना है। इसलिए नींव का सुदृढ़ होना बहुत ही जरूरी है। यहां पर एक ओर वे ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करते थे, वहीं दूसरी ओर आसन, व्यायाम, प्राणायाम आदि के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता और सत्य, न्याय, दया, संयम, यम–नियम आदि को व्यवहार में लाकर अपनी आत्मा का विकास करते थे। विद्यार्थियों की सच्चरित्रता को ध्याम में रखते हुए बालकों तथा बालिकाओं के गुरुकुल अलग–अलग हुआ करते थे तथा उनका वातावरण पूर्णरूप से अनुशासित और शांत हुआ करता था। शिक्षग वर्ग चरित्रवान तथा तपस्वी हुआ करता था। गुरुकुल में विद्यार्थियों को तमाम ज्ञान–विज्ञान के अतिरिक्त समस्त व्यवहारिक बातें भी सिखा दी जाती थीं। ये सभी शिक्षाएं उसके भावी जीवन को सुखमय व समुज्ज्वल बनाने वाली होती थीं। इन गुरुकुलों में अमीर–गरीब सभी बच्चों को एक सामान भोजन तथा अन्य सुविधाएं आदि की जाती थी। चाहे कोई राजा का लड़का हो और चाहे रंक का, सब के लिए गुरुकुलों में जाकर पढ़ना अनिवार्य होता था और शुल्क नहीं लेते थे तथा विद्यार्थियों को भोजन, वस्त्र आदि भी जनता या राज्य की ओर निःशुल्क दिए जाते थे। प्राचीन समय में भारतीय लोगों ने इसका बहुत ही सुन्दर और व्यवहारिक उपाय यह निकाला था कि गुरुकुल के ब्रह्मचारी आस–पास के गांवों या नगरों में भिक्षा मांगने जाते थे। उस भिक्षा के अन्न से वे स्वंय भी अपना भोजन करते थे ओर अपने आचार्यों को भी देते थे। विद्यार्थियों और उनके गुरुओं की आवश्यकता की पूर्ति करना गृहस्थ लोग अपना दायित्व व धर्म समझते थे, किसी प्रकार का बोझ नहीं। भोजनादि के अतिरिक्त गुरुकुल के विद्यार्थियों और आचार्यों की अन्य जरूरतों की पूर्ति भी समाज के गृहस्थों द्वारा ही सहर्ष की जाती थी।

अपनी आंतरिक शक्तियों का पूर्ण विकास करने और गुरुजनों से पूर्णतया दीक्षित हो जाने के बाद ब्रह्मचारी गृहस्थ–आश्रम में प्रवेश करता था, अर्थात् अपने गुण–कर्म व स्वभाव के अनुकूल कन्या के साथ व विवाह करता था। ब्रह्मचर्याश्रमसे गृहस्थाश्रम में जाना, यह आश्रम–व्यवस्था की प्रथम सन्धि है। वैदिक धर्म के अनुसार यह गृहस्थाश्रम भी केवल काम वासनाओं की पूर्ति भर के लिए नहीं होता था बल्कि देश को उत्तम संतान देने और धर्मानुसार जीवन यापन करने के लिए ही पति–पत्नी प्रतिज्ञा करते थे। यह गृहस्थ आश्रम ही अन्य आश्रमों का भी आधार है क्योंकि अन्य सभी आश्रमों का आरक्षण यह गृहस्थ ही करता था। इसके साथ–साथ यदि गृहस्थि से माता–पिता अच्छी सन्तानें पैदा करके देंगे तो इस समाज को अच्छे ब्रह्मचारी, अच्छे वानप्रस्थी और अच्छे संन्यासी मिल सकते हैं। इसलिए वास्तव में देखा जाए तो यह गृहस्थ आश्रम समाज और देश की उन्नति का मूलाधार है। यह जीवन का द्वितीय पड़ाव है। कम से कम पच्चीस वर्ष पुरुष और सोलह वर्ष की आयु की कन्या का विधिवत् विवाह–संस्कार होता था। इस संस्कार में जो प्रक्रियाएँ वर व वधु से कराई जाती हैं वे सभी गृहस्थ को सफल बनाने का आधार स्तंभ है। समाज को उत्तम सन्तान देना गृहस्थ का सबसे प्रमुख दायित्व है। समाज और राष्ट्र आज इसीलिए दुःखी है क्योंकि गृहस्थ से अच्छी सुयोग्य संतान नहीं निकल पा रही है। आज बच्चे तो पैदा हो रहे हैं मगर मानव पैदा नहीं हो रहे हैं क्यों उन्हें मानव बनाने का प्रयास ही नहीं किया जा रहा। यदि मानव सही मानव बन जाए तो देश और समाज निश्चित रूप से सुखी और समृद्ध हो सकेगा। आज हमारे गृहस्थ और समाज के बिगड़ने का सबसे बड़ा कारण यही है कि हम लोगों ने पुरानी वैदिक मर्यादाओं को पूर्णरूप से तिलांजलि दे दी है। जो गृहस्थ स्वर्ग ओर सुख से परिपूर्ण होने चाहिए थे वहां आज वैर–वैमनस्य के कीटाणु बुरी तरह से घुस आए हैं जिससे न केवल व्यक्तियों का जीवन दुःखी है बल्कि उसका कुप्रभाव समाज और देश पर भी पड़ रहा है। इसलिए गृहस्थ का सुधारना ही मानों सब प्रकार के सुधारों का आधार है।

फिर दूसरी सन्धि के रूप में वह गृहस्थी सिर के केश श्वेत और त्वचा ढीली हो जाने तथा लड़के का आगे लड़का हो जाने पर गृहस्थ छोड़कर वानप्रस्थी हो जाया करता था। उस वानप्रस्थी के लिए आदेश था–'तब वन में जाके बसे। ग्राम के सब आहार और वस्त्रादि सब उत्तमोंत्तम पदार्थों को छोड़, पुत्रों के पास स्त्री को रख, व अपने साथ लेके वन में निवास करे। सांगोपांग अग्निहोत्र को लेके ग्राम से निकल दृढ़ेन्द्रिय होकर अरण्य में जाके वसे। नाना प्रकार के सामा आदि अन्न, सुन्दर–सुन्दर शाक, मूल, फल, कन्दादि से पंचमहायज्ञों को करे और उसी से अतिथिसेवा और आप भी निर्वाह करे। इन पंक्तियों में वानप्रस्थ होने और उसके प्रारंभिक कर्तव्यों का साफ संकेत मिलता है। गृहस्थ–आश्रम जीवन का केवल द्वितीय पड़ाव मात्र है, अंतिम पड़ाव नहीं। अपने जीवन को सार्थकता और पूर्णता देने के लिए गृहस्थ से ही चिपक कर नहीं रहना है बल्कि अपने कर्तव्यों का भली प्रकार से निर्वहन करने के बाद तथा सब प्रकार के भोगों को त्यागमयी भावना से

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

ऋषि बोध दिवस वैदिक जीवन पद्धति को अंगीकृत करने का संकल्प दिवस

● मनमोहन कुमार आर्य

आज ऋषि बोधोत्सव ऋषि जन्म भूमि टंकारा सहित देश देशान्तर में मनाया जा रहा है। शिवरात्रि के ही दिन आज से 179 वर्ष पूर्व ऋषि को टंकारा के शिव मन्दिर में शिव की मूर्ति के सम्मुख यह बोध हुआ था कि शिव व अन्य किसी देवता की मूर्ति की पूजा करना मनुष्य के लिए किसी भी प्रकार से लाभप्रद नहीं है। उन्होंने इस बोध के होने पर अपना सारा जीवन ईश्वर के सच्चे स्वरूप के ज्ञान व उसकी उपासना विधि को जानने में लगाया। कालान्तर में उनको सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ कि ईश्वर तो सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्ता आदि गुण, कर्म व स्वभाव वाला है। उसी की उपासना हमें महर्षि पतंजलि के योगदर्शन व ऋषि दयानन्द जी द्वारा वेदों के आधार पर रची गई **'संध्या विधि'** से करनी चाहिए। ईश्वर के सत्य स्वरूप, मनुष्य के कर्त्तव्य व ईश्वर की यथार्थ उपासना विधि को ज्ञान लेने के बाद उन्होंने अपने वेद, वैदिक शास्त्रों और योग विद्या आदि के ज्ञान से संसार के लोगों को अवगत कराया। उन्होंने मौखिक प्रचार किया और साथ ही वेद प्रचार को स्थायित्व प्रदान करने के लिए सत्यार्थप्रकाश, *ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु* सहित अनेक ग्रन्थों की रचना की। महर्षि दयानन्द ने वेद ज्ञान सहित इतर जितना भी ज्ञान प्राप्त किया वह सब शिवरात्रि के दिन हुए उस बोध का परिणाम था और इसमें शिवरात्रि के बाद घटी दो घटनाओं, बहन की अचानक हैजे से मृत्यु और चाचा की मृत्यु भी रही जिससे उन्हें संसार से वैराग्य हो गया था।

ऋषि बोधोत्सव का दिन हमें जीवन में एक संकल्प लेने का प्रतीत होता है। संकल्प इस बात का कि हम ऋषि के जीवन चरित का अध्ययन कर अपने जीवन को भी वेद ज्ञान से सुशोभित व सुरभित करेंगे। ईश्वर भक्त बनेंगे और वेद ज्ञान का प्रचार व प्रसार करेंगे जो कि प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। हमें दो सुधार करने हैं प्रथम अपना सुधार। इसके लिए हमें स्वयं को वेदों की शिक्षाओं के अनुरूप विचार एवं आचरण वाला बनाना होगा और द्वितीय हमें यथाशक्ति आर्यसमाज के संगठन के अन्तर्गत संगठित होकर, लोकैषणा का त्याग कर, वैराग्यवान होकर वैदिक विचारधारा का जन–जन में प्रचार करना है। दूर–दूर तक न सही, अपने आसपास के लोगों को अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से तो हम प्रभावित कर ही सकते हैं। चारों वेदों के साक्षात्कृतधर्मा ऋषि महर्षि मनु ने कहा है कि **'वेदखिलो धर्मऽमूलम्'** अर्थात् वेदों का ज्ञान व आचरण ही मनुष्य के धर्म का मूल अर्थात् आधार है। वेद ज्ञान से रहित मनुष्य पशु समान हो जाता है। यदि कोई मनुष्य सद्गुणों से विभूषित है और वेदों से उसका संपर्क नहीं है, तो यह मानना चाहिए कि वेदों से निकल कर वह गुण उस व्यक्ति तक उसके माता–पिता व आचार्यों के द्वारा व पूर्व जन्म के संस्कारों वा ईश्वर की कृपा से ही पहुंचे हैं। सत्य बोलने और धर्म पर आचरण की शिक्षा का आरंभ वेद ज्ञान से ही हुआ है। आज यदि वेदानभिज्ञ मनुष्य इसका समर्थन करते हैं तो भले ही उनको इस बात का ज्ञान न हो परंतु यह शिक्षा उन तक वेदों से ही चलकर पहुंची है, ऐसा जानना व मानना चाहिए। अतः वेदों की सभी मान्यताओं व सिद्धांतों का प्रचार संसार में होना चाहिए। वेदों के नाम से यदि प्रचार होता है तो इससे लोगों को यह लाभ होगा कि उन्हें वेदों के महत्व का ज्ञान भी होगा और वह अपनी प्रत्येक भ्रान्ति को वेदाध्ययन व वेद की सहायता से दूर कर सकते हैं।

अपने सीमित वेदाध्ययन से हम यह भी अनुभव करते हैं कि जो लोग वेद ज्ञान से दूर हैं वह अनेक प्रकार की भ्रान्तियों से ग्रस्त हैं। हमें यह मनुष्य जीवन हमारे पूर्व जन्मों के सद्कर्मों के आधार पर मिला है। हमारे जीवन के सभी सुख व दुःख हमारे पूर्व व वर्तमान जीवन के कर्मों का ही परिणाम है। हमारा परजन्म, मृत्यु के बाद होने वाला जन्म, भी हमारे इस जन्म व पूर्व के सभी न भोगे गये कर्मों के आधार पर ही होगा। अतः हमें अपने कर्मों पर ध्यान देना आवश्यक है। यह कार्य केवल वेदों व ऋषियों के ग्रन्थों के अध्ययन से ही सम्भव हो सकता है। श्रेष्ठ परजन्म के लिए हमें ईश्वरोपासना एवं यज्ञादि कर्मों में रूचि लेनी होगी और पंचमहायज्ञों के सम्पादन में प्रमाद से बचना होगा। इसके लिए ऋषि ग्रन्थों का अध्ययन कर अपने ज्ञान को बढ़ाया जा सकता है। उपनिषद एवं दर्शनों का अध्ययन भी हमारे कर्त्तव्यों के बोध में अत्यधिक सहायक होता है। इन सभी ग्रन्थों के अध्ययन से किसी को भी विमुख नहीं होना चाहिए।

ऋषि दयानन्द बोध से हमें यह भी प्रेरणा मिलती है कि हमें एकांगी नहीं अपितु सर्वांगीण जीवन व्यतीत करना है। हमें स्वास्थ्य के सभी नियमों का पालन करते हुए स्वस्थ रहते हुए अपनी आयु को बढ़ाना है अर्थात् अपनी आयु को किसी बुरे कर्म से घटाना नहीं है। वेद एवं वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय कर हमें अपने कर्त्तव्यों का यथाशक्ति पालन करना है। सभी मनुष्यों को अविद्या के नाश व विद्या की वृद्धि के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। यह बोध भी ऋषि दयानन्द जी ने हमें कराया है। इसका अर्थ यह भी है कि हमें अवैदिक व वेदविरुद्ध विचारों का खण्डन और वेद सम्मत विचारों व मान्यताओं का युक्ति, तर्क व प्रमाणों से मण्डन करना है। हमें मूर्तिपूजा के साथ व्यक्तिगतपूजा, कब्र पूजा, मृतक लोगों के चित्रों की पूजा आदि का खण्डन करना होगा। ईश्वर के स्थान पर आज लोग अपने–अपने गुरुओं की पूजा को ही ईश्वर स्तुति, प्रार्थना–उपासना का पर्याय मानने लगे हैं, उनसे भी लोगों को सावधान करना होगा। इन अंधविश्वासों से देश कमजोर हो रहा है। लोगों का बहुत सा समय इन गुरुओं की शरण में उनका भजन–कीर्तन आदि में व्यर्थ होता है जिससे देश के आगे बढ़ने में रुकावट आती है। ऐसे लोग देशोन्नति में अधिक सहायक नहीं होते हैं। हमने अनुभव किया है कि यूरोप की प्रगति में संगठित ज्ञान विज्ञान के अध्ययन, विचार–विनिमय, गोष्ठी आदि के द्वारा उन्नति का विशेष योगदान है। यह सभी लोग अन्धिविश्वासों से प्रायः मुक्त थे। ऐसे ही देशवासी हमारे देश को भी उन्नति के पथ पर ले जा सकते हैं। इसका भी आकलन कर हमें प्रचार करना चाहिए और लोगों को मिथ्या पूजा व उपसना से हटा कर वेदसम्मत योगविधि व सन्ध्या आदि के द्वारा ईश्वर उपासना का प्रचार करना है।

ऋषि जीवन ने देश को जो ज्ञान व दर्शन दिया है उसके आधार पर वैदिक धर्म संसार का ज्ञान व विज्ञान से युक्त एकमात्र धर्म सिद्ध होता है। वेद प्रचार की न्यूनता ही है कि देश व विश्व में आज भी अज्ञान, मिथ्या मत–मतान्तर, मिथ्यापूजापाठ व इनकी जननी अविद्या विद्यमान है। वेद प्रचार को कैसे अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाया जाये इस पर आर्यसमाज व ऋषिभक्तों को विचार करना है। देश में हिन्दुओं की घट रही जनसंख्या व दूसरों मतों की संख्या में वृद्धि भी हमारे लिए विचार व चिंतन का विषय होनी चाहिए। इसके भविष्य में दुष्परिणामों पर भी हमें विचार करना चाहिए और आवश्यक उपाय करने चाहिए जिससे आर्य हिन्दू समाज अल्पसंख्यक होने से बच सके। अल्पसंख्यक होने का क्या दुष्परिणाम हो सकता है, यह विश्व के विगत एक डेढ़ हजार वर्षों के इतिहास के अध्ययन से जाना जा सकता है। अवैदिक पूजा, असंगठन, सामाजिक विषमता आदि का परिणाम ही तो हमने विगत लगभग एक हजार वर्षों तक भोगा है जिसमें विधर्मियों की गुलामी, अन्याय व अत्याचार सम्मिलित है। हमें लगता है कि हमने इन घटनाओं से कोई शिक्षा नहीं ली है। आज भी हम उन विधर्मियों की पराधीनता व उनसे मिले दुखों के कारणों का ही सेवन कर रहे हैं। अतः ऋषि बोध दिवस पर हमें सभी क्षेत्रों में सावधान होना है।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
मो. 09412985121

अग्निहोत्र विषयक चर्चा : जल प्रोक्षण

● डॉ. सुशील वर्मा

महर्षि दयानन्द की देवयज्ञ निर्धारित पद्धति में पञ्च घृताहुतियों के पश्चात् जल प्रोक्षण की प्रक्रिया है। जल प्रोक्षण इसलिए कि कोई जीव जन्तु यज्ञ कुण्ड के समीप न आ सके। यदि यही क्रिया पहले अर्थात् यज्ञ के प्रारम्भ करने से पहले की जाती और बाद में अग्नयाधात किया जाता तो जीव जन्तु यदि कहीं कुण्ड में छिपा होता तो वह बाहर नहीं आ पाएगा। यज्ञ में किसी प्रकार की हिंसा नहीं होनी चाहिए इसलिए यज्ञ का एक नाम '**अध्वर**' भी है अर्थात् हिंसा रहित।

यज्ञ वेदी के चारों ओर जल छिड़कने के कारण:–

1. कोई भी जीव जन्तु यज्ञ वेदी के पास न आने पाए।

2. वैज्ञानिक तथ्य यह भी है कि यज्ञाग्नि में आहुतियाँ ड़ालने से कुछ ऐसी भी गैसे पैदा होती है जिनके कारण समीपस्थ जल कृमि नाशक बन जाता है। ज्वलन होने पर कार्बन डाइक्साइड गैस जल के साथ फार्मेल्डीहाइड बनाती है जो कि कृमि नाशक है। क्यों कि हवन वायु को शुद्ध एवं कृमिरहित करता है, उसी तथ्य से प्रभावित हो कर्नल किंग, आई.एम. एस. ने कहा था "घरों के कृमियों के नाश करने की हिन्दुओं की विधि आधुनिक ढंग के अनुसार थी।"

3. पृथिवी के अन्दर भी अग्नि (**भौम अग्नि**) रहती है और पृथिवी के चारों ओर जल ही जल है। यही प्रतीक यज्ञकुण्ड के गर्भ में अग्नि और चारों ओर जल का है।

"**अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि**" (यजु 23/62) यह यज्ञ तो सारे ब्रह्माण्ड की नाभि है। अध्यात्म में इसे ऐसे समझें कि हवन कुण्ड जहाँ अग्नि प्रज्ज्वलित हो रही है वह प्रकाश लोक है, जहाँ यजमान बैठा है वह मृत्युलोक पृथ्वी है और इन दोनों के मध्य जल है। जिस जगह जल है उसके दो किनारे हैं–यजमान की तरफ वाला किनारा '**श्रद्धा**' का प्रतीक और प्रकाश अर्थात् हवन कुण्ड की तरफ वाला किनारा 'त्याग' का प्रतीक। इस प्रकार श्रद्धा और त्याग के मध्य प्रेम का जल भरा हुआ है। अग्नि अपनी ज्वाला से प्रेम के जल को अमृत रूप में भाप बनाकर '**भूः**' से भुवः और अन्ततः स्वः लोक का सम्बन्ध जोड़ रही है अर्थात् मृत्युलोक से प्रकाश लोक की यात्रा का यह साधन–'**यज्ञ**'।

जल प्रोक्षण की क्रिया सम्बन्धी स्वामी जी ने तो केवल दिशाओं का उल्लेख किया है कि पहले मन्त्र से पूर्व में दूसरे से पश्चिम में तीसरे से उत्तर में और चौथे से वेदी के चारों ओर जल छिड़के। वहाँ यह निर्देश नहीं है कि किस दिशा में किस ओर जल छिड़कें। इसका उत्तर आज विद्वजन अपने अपने ढंग से दे रहे हैं। जहाँ तक मैं इसे समझ पाया हूँ कि पहले तीन मन्त्र स्वामी जी ने गोमिल गृह सूत्र (1.3.1.3) तथा आपस्तम्बग्रह सूत्र (1.2.3) से उद्धत किए हैं इसलिए हमें उसी का अनुसरण करना चाहिए। इस प्रकार है सूत्रः–

अदितेऽनुमन्यस्वेति दक्षिणतः प्राचीनम्
अनुमतेऽनुमन्यस्वेति पश्चादुदीचीनम्।
सरस्वत्येनुमन्यस्वेति उतरतः प्राचीनम्
देव सवितः प्रसुवेति समन्तम्
(आपस्तम्बगृहसूत्र 1.2.3)

अर्थात् जल सेंचन की गति पूर्वाभिमुख (प्राचीनम्) तथा उत्तराभिमुख (उदीचीनम्) होगी।

तात्पर्य यह है कि पूर्व और पश्चिम में जल छिड़केंगे तब दक्षिण से उत्तर और जब उत्तर में जल छिड़केंगे तो पश्चिम से पूर्व की ओर जल गति होगी। चारों ओर जल छिड़केंगे तो पूर्व दक्षिण कोण से आरम्भ करके दक्षिण पश्चिम उत्तर पूर्व इस क्रम से प्रदक्षिणा की तरह जल प्रोक्षण करते हुए पूर्व दक्षिण कोण पर जहाँ प्रारम्भ किया था वहीं पहुँच कर विश्राम देंगे। इस प्रकार जल की गति पूर्व व उत्तर में होनी है। ज्यादा विवाद में पड़ने की आवश्यकता नहीं।

अब मन्त्रों के विषय में चर्चा की जाए। आपको विदित ही है कि पहले तीन मन्त्र गोमिल एवं आपस्तम्ब गृह्म सूत्रों से है और चौथा मन्त्र यजुर्वेद के 30वें अध्याय का पहला मन्त्र है। 1.

पहला मन्त्रः– **ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व।** (पूर्व दिशा में जल छिड़के)

मन्त्रार्थः– हे सर्वरक्षक (**अदिते**) अखण्ड परमेश्वर (**अनुमन्यस्व**) मेरे इस कर्म का अनमोदन करो अर्थात् मेरा यह यज्ञ अनुष्ठान अखण्डित रूप से होता रहे।

अथवा तो पूर्व दिशा में जल सेंचन के सदृश मैं यज्ञीय पवित्र भावनाओं का प्रसार प्रचार निर्विघ्न रूप से कर सकूँ।

2. दूसरा मन्त्रः– **ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व** (पश्चिम दिशा में जल छिड़कें)

हे सर्वरक्षक (**अनुमते**) यज्ञीय एवं ईश्वरीय संस्कारों के अनुकूल बुद्धि प्रदत्त करने में समर्थ परमेश्वर! (**अनुमन्यस्व**) मेरे इस यज्ञ कर्म का अनुकूलता से अनुमोदन करो।

अथवा तो पश्चिम दिशा में जल सिंचन के सदृश मैं यज्ञीय पवित्र भावनाओं का प्रचार प्रसार आपकी कृपा से कर सकूँ।

3. तीसरा मन्त्रः– **ओ३म् सरस्वतेऽनुमन्यस्व** (उत्तर दिशा में जल छिड़कें)

हे सर्वरक्षक (सरस्वते) ज्ञानस्वरूप एवं ज्ञान प्रदाता परमात्मन्! (**अनुमन्यस्व**) मेरे इस यज्ञ कर्म का अनुमोदन करो।

अथवा तो उत्तम बुद्धि से यह यज्ञानुष्ठान सम्यक् विधि से सम्पन्न होता रहे।

4. (**देव सवितः**) हे प्रकाशक प्रेरक परमेश्वरः! (**यज्ञ प्रसुव**) यज्ञ को प्रेरित करो (**यज्ञपति प्रसुव**) मुझ यजमान को प्रेरित करो। (भगाय) जिससे उत्कृष्ट फल की प्राप्ति हो। (**गन्धर्वः**) आप विलक्षण ज्ञान के प्रकाशक हो, पवित्र वेद वाणी अथवा पवित्र ज्ञान के आश्रय हो। (**केतपूः**) ज्ञान विज्ञान से बुद्धि मन को पवित्र करने वाले हो। अतः हमारे (केतुपुनातु) बुद्धि मन की पवित्र कीजिस। (**वाचस्पतिः**) वाणी के स्वामी हो। अतः हमारी वाणी को (**स्वदत**) मधुर बनाइए।

अथवा तो चारों दिशाओं में जल सिंचन के सदृश मैं यज्ञीय पवित्र भावनाओं का प्रचार प्रसार कर सकूँ। इस कर्म के लिए मुझे उत्तम ज्ञान, पवित्र आचरण और मधुर वाणी में मुझे समर्थ बनाइए।

आइए इन मन्त्रों को आधिदैवत और अध्यात्म परिप्रेक्ष्य में समझने की कोशिश करते है। इस पर चिन्तन करते है।

इन मन्त्रों में चार देवता है–अदिति, अनुमति, सरस्वती एवं सविता

अदितिः– आधिदैवत में अदिति है प्राची की उषा (उषाएँ यज्ञ की प्रेरक है) अध्यात्म में अदिति है अजर अमर जीवात्म शक्ति ये सब यज्ञ को उत्पन्न करती है, यज्ञाग्नियों को प्रज्वलित करती हैं। "**अजीजनन् सूर्य यज्ञमाग्निम्**" (त्रक 7.78.3) इसके अतिरिक्त यदि आत्मा का समर्थन न हो तो मनुष्य यज्ञ में प्रवृत नहीं हो सकता। अदिति तो आत्म यज्ञ की नौका है "**सुत्रामाणं पृथिवीं धामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्**" (यजु 21.6)

अनुमतिः– आधिदैवत में अनुमते है पश्चिम सन्ध्या। यह भी यज्ञ का उद्बुद्ध करती है। अध्यात्म में बुद्धि एवं मन अनुमते है इस प्रकार अनुकूल निश्चय करते वाली बुद्धि विद्वानों में हमारे द्वारा किए जाने वाले यज्ञ का अनुमोदन करें।

सरस्वतीः– आधिदैवत में उत्तरायण की सूर्य प्रभा सरस्वती है। यह भी अपने चरित्र एवं गुणों से यज्ञ की प्रेरिका है।

अध्यात्म में सरस्वती वाणी है, वाणी द्वारा ही मन्त्रोच्चारण सम्भव है। इसलिए मन्त्रोच्चारण व यज्ञ की महिमा का गान भी सरस्वती (वाणी) द्वारा होने के कारण इस का अनुमोदन आवश्यक है।

सविताः– आधिदैवत में सूर्य सविता है और सूर्य द्वारा ही सम्वत्सर रूपी यज्ञ चलता है। अध्यात्म में सविता प्रेरक परमेश्वर है। इसलिए हे सविता! चाहे हम सूर्य रूप में ले, चाहे प्रेरक परमेश्वर प्रतीक वह मेरे अन्दर सदा यज्ञ की प्रेरणा प्रदान करता रहे।

इस प्रकार तीनों ही मन, बुद्धि एवं आत्मा व वाणी हमें यज्ञ के लिए प्रेरित करते रहें और हमारे यज्ञ का अनुमोदन करें ऐसी हमारी प्रार्थना है।

अन्तिम मन्त्र में उसी परमात्मा का गुणगान है। वही गन्धर्वः है अर्थात् आत्मा रूपी गौ को धारण करने वाला। वही केतपूः अर्थात् मन बुद्धि एवं विचारों को पवित्र करने वाला। वही वाचस्पति अर्थात् वाणी का स्वामी है, वही इसे मधुर बनाए।

अन्ततः यही सारांश है कि स्वामी जी ने जल सेंचन द्वारा इन मन्त्रों का विनियोग कर उस परमपिता परमात्मा से यज्ञ अनुमोदन की प्रार्थना यज्ञकर्त्ता द्वारा करवाई। जहाँ उस परमसत्ता का अनुमोदन है, प्रेरित है, तो फिर यज्ञ तो यज्ञमयी भावना से सम्पन्न होगा ही। प्रार्थना हम याज्ञिकों को यज्ञ में प्रेरित करे और हम यज्ञमयी हो कर अपना जीवन यापन करें।

मास्टर मूलचन्द वर्मा गली
फाजिलका, पंजाब– 152123
मो. 9217832632

मनु का विरोध क्यों?

● माम चन्द रिवाड़िया

मनु के बारे में कहा जाता है कि Manu is the earlier law giver of India. अनुवाद का सही अर्थ है 'गुण–कर्म योग्यता के श्रेष्ठ मूल्यों के महत्त्व पर आधारित विचार धारा लेकिन जन्मना जाति व्यवस्था से हमारे समाज और राष्ट्र का बहुत पतन हुआ और भविष्य के लिए भी यह घातक है।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने वेदों के बाद मनुस्मृति को ही धर्म में प्रमाण माना है। तत्कालीन राष्ट्रपति डा0 आर. वेंकटरमन डा0 भीमराव अम्बेडकर को भारत का आधुनिक मनु शब्द से गौरवान्वित किया था। डा0 अम्बेडकर का दुर्भाग्य था कि वे संस्कृत के ज्ञाता नहीं थे। उन्होंने विदेशों द्वारा अंग्रेजी में छपे तथा सारण आदि पोंगा पण्डितों द्वारा रचित मनुस्मृति पढ़ी थी इसलिए वे वेद सम्मत मनुस्मृति के पढ़ नही पाये। इसलिए वेद विरूद्ध लिखी गई मनुस्मृति कों ही पढ़ नही पाये। इसलिए वे वेद विरूद्ध लिखी गई मनुस्मृति को पढ़ नहीं पाये। इसलिए वे वेद विरूद्ध लिखी गई मनुस्मृति कों ही पढ़ सके। जर्मन विद्वान् प्रसिद्ध दार्शनिक फिडरिच ने वेदों पर आधारित मनुस्मृति पढी थी उसके आधार पर उन्होंने ने कहा था ''मनुस्मृति पढ़ी थी उसके आधार पर उन्होंने ने कहा था ''मनुस्मृति बाईबल से उत्तम ग्रन्थ है'' बालिद्वीप, वर्मा, थाईलैंड, कम्बोडिया, इन्डोनेशिया, लंका तथा नेपाल आदि देशों से प्राप्त शिला लेखों और उनके प्राचीन इतिहास से ज्ञात होता है कि वहाँ मनु के धर्मशास्त्र पर आधारित कर्मानुसार वर्णव्यवस्था रही है उन्ही के अनुसार न्याय होता है। फिलीपीन के निवासी मानते है कि उनकी आचारसंहिता के निर्माण में मनु और लाओत्से की स्मृति का प्रमुख योगदान रहा है, इस कारण वहाँ की विधानसभा के द्वार पर इन दोनों की मूर्तियाँ स्थापित हैं। इन देशों के शिलालेखों और इतिहास से इस बात की पुष्टि होती है कि ईरानवासी आज भी मनुस्मृति के कारण अपने आपको आर्यवंशी मानते है। कम्बोडिया के निवासी अपने आपको मनु की सन्तान कहते हैं।

बडे दु:ख के साथ लिखना पड़ रहा है कि मनु को सनातनी पोंगा पण्डितों ने यह भ्रम फैलाया कि मनुस्मृति में हजारों श्लोक वेद विरुद्ध हैं और दलितों पर अनेक श्लोक लिखकर अपमानित किया गया है जिसके कारण महान् विद्वान् तथा संविधान निर्माता डॉ0 भीमराव अम्बेडकर इनके झासे में आ गये और उन्होंने अपने हजारों अनुयायियों की उपस्थिति में मनुस्मृति को फाड़ा और जलाया और हिंदू धर्म से अलग हो बोद्ध धर्म अपनाया।

मनुस्मृति में वर्णव्यवस्था में वर्णपरिवर्तन का विधान है। यदि ब्राह्मण कुल मे जन्मा व्यक्ति व्यभिचारी, शराबी जुवारी है तो वह शूद्र कहलायेगा और शूद्र कुल में जन्मा व्यक्ति यज्ञ करता है, गुरुवान है तो वह ब्राह्मण कहलायेगा। ब्राह्मण तामड़गति मनु कहते है:–

शूद्रो ब्राह्मणतां एति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् ।
क्षत्रियाज्जातं एवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ।।
मनु.१०.६५ ।।

अर्थात गुण–कर्म की योग्यता के आधार पर ब्राह्मण शूद्र बन जाता है और शूद्र ब्राह्मण शूद्र बन जाता है। इसी प्रकार क्षत्रियों और वैश्यों मे भी वर्ण परिवर्तन हो जाता है। महाभारत काल में पूर्णरुप से वर्णव्यवस्था थी। महाभारत युद्ध के बाद वर्णव्यवस्था समाप्त हो गई। जिसका देश और संसार को बहुत नुकसान हो रहा है।

पोंगा पण्डित द्वारा गढ़े हुऐ श्लोकों के माध्यम से दलित तथा स्त्रियों पर जुल्म करवाते है जबकि वेद आधारित मनुमहाराज स्त्रियों के बारे में कहते हैं

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।।
मनु.३.५६ ।।

अर्थात् जिस परिवार में नारियों का आदर–सम्मान होता है, वहीं देवता निवास करते हैं और जहाँ इनका अपमान होता है, वहाँ उनकी सब क्रियाएं निष्फल हो जाती है। शूद्रों के लिए जो कठोर दण्डो का विधान मिलता है वह इन पोंगा पण्डितों की देन है। मनु कहते हैं जितना बड़ा विद्वान् उतना कठोर दण्ड और जितना कम बुद्धिवाला उतना कम दण्ड का मनुस्मृति में वर्णन है जो वेदानुकुल है।

महर्षि मनु और डॉ0 अम्बेडकर : भारतीय लेखकों में मनु के विरोध में प्रमुख रूप से डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी का नाम विशेष तौर पर लिया जाता है, जिसका मुख्य कारण रहा है कि पोंगा पण्डितों ने अनेक ऐसे श्लोको की भरमार मनुस्मृति में कर दी है जिसको पढ़कर उन्हें अत्यन्त पीड़ा हुई थी जिसके कारण उन्होंने मनुस्मृति को जलाया ही नहीं बल्कि मनु की कटु शब्दो में आलोचना की और अपने अनुयाईयों को आदेश दिया कि वे जहाँ भी मनुस्मृति का प्रचार कोई करे उसको विरोध करें। डॉ0 अम्बेडकर जी ने संविधान मे प्रावधान किया है कि अनुचित निर्णय से निरपराध को दण्ड नहीं मिलना चाहिये चाहे अपराधी मुक्त हो जाए। लेकिन डॉ0 साहब ने मनु पर जन्मजात आधारित सामाजिक व्यवस्थाओं को थोपकर अनावश्यक रूप से उन्हें दोषी करार दे दिया जो वास्तव में अनुचित था। उन्होंने मनु सम्बन्धी समस्त अध्ययन अंग्रेजी भाषा में लिखी आलोचनाओं के माध्यम से ग्रहण किया है। इसी संदर्भ में डॉ0 अम्बेडकर यह कहते हैं कि मै मानता हूँ कि स्वामी दयानन्द ने वर्ण के वैदिक सिद्धान्त की जो व्याख्या की है वह गुण–कर्म स्वभाव पर आधारित है जन्म के आधार पर नहीं। डा0 अम्बेडकर वर्तमान जाति–पाति रहित संविधान के निर्माता है। वेदों मे जातिव्यवस्था का नामोनिशान तक नही है। यहाँ तक कि महात्मा बुद्ध ने वेदों की प्रशंसा करते हुए धर्म में वेदों के महत्व को दर्शाया है। असली मनुस्मृति में कहा गया है द्विज वर्ण के व्यक्ति वृद्ध शूद्र को पहले सम्मान दें। यह सम्मान पहले तीन वर्गो में किसी को नहीं दिया गया है। मनु ने शूद्र सहित चारो वर्गो को सवर्ण माना है जबकि पोंगा पण्डितों ने इससे अलग विचार श्लोकों द्वारा मनुस्मृति में भर दिये हैं।

मनु ने पुत्र–पुत्री को एक समान माना है। जिस प्रकार पिता की जायदाद में पुत्र का अधिकार है उतना ही पुत्री का भी अधिकार है। मनु ने विधवा विवाह का समर्थन किया है और बाल–विवाह का घोर विरोध किया है। मनु कहते है कि स्त्री का जीवन पर्यन्त अविवाहित रहना श्रेयस्कर है, किन्तु गुणहीन दुष्ट पुरुष से विवाह नहीं करना चाहिए। मनु कहते है कि वैदिक काल में स्त्रियों को वेद पढ़ना और यज्ञ आदि के सभी अधिकार प्राप्त थे। वे ब्रह्म के पद को सुशोभित करती थी।

जो न्यायपूर्ण, श्रेष्ठ और गुण–कर्म योग्यता पर आधारित विधान है, वे मनु के मौलिक श्लोक हैं, जो उनके विरूद्ध, अन्याय और पक्षपातपूर्ण है, वे प्रक्षिप्त हैं अर्थात् समय–समय पर बाद में लोगों ने रचकर मनुस्मृति में मिला दिये है।

अन्त में वैदिक विद्वानों, संन्यासियों, आर्य समाजों और आर्य समाज से सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं और गुरूकुलों के आचायों से नम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि वे मनु द्वारा मौलिक श्लोकों का अर्थ सहित दलितों–पिछड़े वर्गों और आदिवासियों में सरल भाषा में एक लेख लिख कर लाखों लोगों में वितरित करें और पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करें ताकि पोंगा पण्डितों की जनता में पोल खोली जा सकें।

संस्थापक महामंत्री
आर्य समाज टैगोर गार्डन नई दिल्ली
9212003162

माता प्रेमवती आर्या दिवंगत

आर्य समाज फजलपुर जिला बुलन्दशहर (उत्तरप्रदेश) के यशस्वी प्रधाना व दानवीर श्री अशोक आर्य शास्त्री की पूज्या माता श्रीमती प्रेमवती जी आर्या का अचानक 90 वर्ष की दीर्घायु में हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया जिससे समस्त जनपद बुलन्दशहर में शोक छा गया।

शीला माता जी सरल स्वभाव की दान नारी थीं। वे शाम सवेरे दोनों समय संध्या हवन करती थीं। वैदिक विद्वानों एवम् आर्य वेद प्रचारकों का सत्कार करना उनका विशेष गुण था। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनका अंतिम संस्कार वैदिक रीति से स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वैदिक आश्रम अलीगढ़ ने सम्पन्न कराया। जिसमें सैंकड़ों व्यक्ति सम्मलित हुए।

आध्यात्मिक प्राथमिक पाठशाला

● डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

भौतिक या व्यावहारिक क्षेत्र में व्यक्ति अत्यन्त तीव्र गति से कक्षाओं के विभिन्न सोपानों को लाँघता हुआ अन्तिम सोपान पर पहुँच जाता है। पता ही नहीं चलता कि कब उसने पहली कक्षा के बाद पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली। भौतिक क्षेत्र में व्यक्ति पहली कक्षा में 'अ' से अनार तो सीख जाता है लेकिन वह आध्यात्मिक प्राथमिक पाठशाला की पहली कक्षा में 'अ' से आत्म तत्त्व का ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता। दूसरे शब्दों में कहें तो वह आध्यात्मिकता से शून्य बना रहता है। यदि आध्यात्मिक दृष्टि से चिन्तन करें तो इस पहली कक्षा का नाम है। जड़ प्रकृति। सबसे निचले स्तर पर जड़ पदार्थ आते हैं। इनमें कोई गति नहीं होती, ये चेतना शून्य होते हैं। युग–युगान्तर बीत जाने पर भी इनकी प्रकृति में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता। पुराने खंडहर इस बात के प्रमाण हैं। फिर भी जड़ प्रकृति चेतना सत्ता की क्रीडा स्थली है।

भूतानां प्राणिनः ज्येष्ठाः यह आध्यात्मिक प्राथमिक पाठशाला की दूसरी कक्षा है। पहली कक्षा में जड़ पदार्थ हैं तो दूसरी कक्षा में प्राणवान् पदार्थों की सत्ता है। निःसंदेह भौतिक या जड़ पदार्थों से प्राणधारी श्रेष्ठ हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो निर्जीव पत्थर से सजीव कीट (कीड़) श्रेष्ठ हैं क्योंकि उसमें गति या चेतना का संचार है। वह उदर पूर्ति के लिए या प्राण रक्षा के लिए इधर–उधर गति कर सकता है। वर्षा आने पर किसी बिल में घुस सकता है। धूप से बचने के लिए किसी वृक्ष की छाया में जा सकता है। चेतना या प्राण वायु उसे गतिशील रखती है।

प्राणिसु बुद्धि जीविनः यह आध्यात्मिक पाठशाला की तीसरी कक्षा है। चेतन प्राणियों की अपेक्षा बुद्धि संपन्न प्रणी श्रेष्ठ होते हैं। उदाहरण के तौर पर एक कीड़े की अपेक्षा एक कुत्ता श्रेष्ठ है क्योंकि उसमें इतनी बुद्धि है कि दो–चार शब्द रट लेता है बंदर भी थोड़ी मनुष्यों जैसी हरकत कर लेता है। परन्तु यह अत्यल्प बुद्धि सामाजिक हित चिन्तन के कार्य नहीं कर सकती।

बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः यह आध्यात्मिक पाठशाला की चौथी कक्षा है। कहने के लिए तो मुधुमक्खी को बुद्धिमान कहा जा सकता है क्योंकि वह छत्ते में मधु को तैयार करती है परन्तु उसका ज्ञान सीमित है। वह मधु के सिवाय और कुछ तैयार नहीं कर सकती। उसकी बुद्धि में विकास की संभावना नहीं है। अतः बुद्धिमानों में भी मनुष्य श्रेष्ठ है क्योंकि वह प्रत्येक कार्य सोच–समझ कर करता है– 'मत्वा कामाणि सीव्यति' उसमें बौद्धिक विकास की अपार संभावनाएँ हैं। वह महान विद्वान भी बन सकता है। और वैज्ञानिक भी। वह समुद्र तल को भी छू सकता है और आकाश की ऊँचाई का भी स्पर्श कर सकता है।

मनुष्येषु ब्रह्मणाः यह आध्यात्मिक पाठशाला की पाँचती कक्षा है। बुद्धिमान तो बहुत होते हैं जो समाज पर अपनी बुद्धिमता की छाप डालते हैं, समाज को चमत्कृत भी कर सकते हैं, पर बुद्धिमान होना ही सबकुछ नहीं है। बुद्धिमान वही है जो ब्राह्मण बनना चाहता है। 'ब्राह्मण का अभिप्राय है– ब्रह्म के प्रति जिज्ञासा। ईश्वर क्या है, आत्मा का स्वरूप क्या है, प्रकृति से कैसे मुक्ति किल सकती है? आदि प्रश्नों के समाधान की जिनके मन में जिज्ञासा बनी रहती है, वे ही ब्राह्मण हैं।

ब्राह्मणेषु विद्वान्सः आध्यात्मिक पाठशाला के उपरान्त अब छठी कक्षा का पाठ्यक्रम है ब्रह्म के प्रति जिज्ञासा होनी चाहिए, लेकिन जिज्ञासा की तृप्ति भी तो होनी चाहिए। जो जिज्ञासा की तृप्ति कर लेता है, आत्मा, परमात्मा और प्रकृति के रहस्य को समझ लेता है और तदनुसार आचरण तथा व्यवहार करता है, वहीं विद्वान कहलाता है। महर्षि दयानन्द ने पहले सच्चे शिव के प्रति जिज्ञासा प्रकट की और फिर जिज्ञासा के तृप्ति के लिए वेदों का अध्ययन किया तथा वैदिक सिद्वान्तों से जनमानस को अवगत कराया।

विद्वन्सु कृत निश्चयः मनुष्य अनवरत परिश्रम करके विद्वान हो सकता है, अनेक ग्रन्थ लिख सकता है, प्रवचन भी दे सकता है लेकिन जब तक संकल्प का अभाव हो, कर्तव्य निष्ठा के प्रति पूर्ण समर्पण की कमी हो, तब तक व्यक्ति अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकता है। हमने ऐसे साधक देखे हैं, जिनमें अद्भुत पांडित्य होता है, वे विभिन्न विषयों में पारंगत भी होते हैं परन्तु पूर्ण निश्चय या संकल्प की न्यूनता उनकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक हो जाती है।

कृत निश्चय जनेष्वापि ब्रह्मवेदिनः यह आध्यात्मिक कक्षा का अन्तिम सोपान है ईश्वर चिन्तन या ब्रह्म प्राप्ति का संकल्प तो कितने ही लोग कर लेते हैं लेकिन क्या वे सभी ब्रह्मवेता हो जाते हैं? निश्चय के साथ स्वाध्याय और साधना की भी आवश्यकता होती है। उपनिषद में कहा गया है कि जिस पर परमात्मा की कृपा होती है, परमात्मा स्वयं उसका वरण कर लेता है, अपने रहस्यों को प्रकट कर देता है। ब्रह्मवेता कभी भी सांसारिक बंधनों से प्रभावित नहीं होता है। ब्रह्म उसकी चेतना और उसके चिन्तन का अंग बन जाता है। आइये विचार करें, हम आध्यात्मिक पाठशाला में किस कक्षा के विद्यार्थी हैं।

230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम,
ज्वालापुर, हरिद्वार
मो. 9639149995

सब उन्नतियों का आधार सोम

● डा. अशोक आर्य

जब सोम की हम अपने शरीर में ही रक्षा करने में सफल हो जाते हैं तो हम वृद्धि की ओर बढ़ने लगते है तथा इससे हम में ज्येष्ठता भी आती है। हम महानता की ओर अग्रसर होते हैं। इस तथ्य का प्रकाश यह मन्त्र इस प्रकार कर रहा है:–

त्वं सुतस्य पीतयो सद्यो व्रद्धो अजायथाः।
इन्द्र ज्यैष्ट्याय सुक्रतो।। ऋग्वेद ।।

यइ मन्त्र तीन बातों पर प्रकाश डालते हुए कह रहा है कि:–

हम सोम के रक्षक बनें

हे उत्तम भावनाओं से भरे हुए जीव! हे उत्तम कर्मों को करने वाले जीव!, हे उतम संकल्पों वाले जीव!, हे उतम ज्ञान से भरपूर जीव! तूं इस उत्पन्न हुए सोम का रक्षक है। तेरा निर्माण ही, तेरा जन्म ही सोम के रक्षण के लिए हुआ है। यह सोम तेरा रक्षक है किन्तु केवल तब तूं दढ निश्चय से इस सोम की रक्षा करेगा।

हम जानते हैं कि शरीर की सब शाक्तिओं का केन्द्र सोम ही होता है। जिसके शरीर मे सोम की जितनी मात्रा अधिक होगी, उसका शरीर उतना ही अधिक बलिष्ठ होगा। बलिष्ठ शरीर में ही ज्ञान का प्रकाश होता है, स्वाध्याय की शक्ति आने से बुद्धि तीव्र होती है तथा शरीर में पवित्रता आती है। इस प्रकार की और भी अनेक उपब्धियों को पाने के लिए हम सोम के रक्षक बनें।

उत्तम बुद्धि हेतु सोम को धारण करें

जब जीव सोम को अपने शरीर में विपुल मात्रा में धारण कर लेता है। तो ऐसे शरीर मे सब प्रकार की शक्तियां आ कर केन्द्रित हो जाती हैं। मानव सब प्रकार की शक्तियों की दृष्टि से बढ़ा हुआ, उन्नत व अग्रगामी हो जाता है। इतना ही नहीं एसे मानव के मन शुद्ध शक्तियों से भरे होंगे, एसे व्यक्ति के मन शुद्ध होंगे, किसी प्रकार की गन्दगी इस के मन में नहीं होगी। इसका विकसित शक्तियों वाला शरीर सदा निरोग रहेगा। किसी प्रकार के रोग के इस शरीर में प्रवेश का साहस ही नहीं होगा अपितु जो रोगाणु पहले से शरीर में हैं, उनका यह सोम नाश कर देगा। एसे व्यक्ति के मन निश्चल होंगे। मन एकाग्र हो कार्य करेगा, इधर उधर भटकेगा नहीं। एक ही स्थान पर केन्द्रित मन ही सब सफलताओं का कारण होता है, निश्चल मन ही सब सफलताओं का आधार होता है तथा एसे व्यक्ति की बुद्धि सूक्ष्म व इतनी दीप्त हो जाती है कि बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान भी वह क्षणों में ही कर लेती है। दीप्त अर्थात तीव्र बुद्धि वाला व्यक्ति ही सर्वत्र सफलता प्राप्त करता है। एसी बुद्धि विपुल मात्रा में सोम के स्वामी को ही मिलती है। इस लिए हम सोम की अत्यधिक मात्रा में एकत्र कर अपने शरीर मे सम्भालें।

सोम रक्षक ही ज्येष्ठता को पाता हैं

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव। तूं इन्द्रियों का पान करने वाला है अर्थात इन्द्रियों का अधिष्ठाता होने के कारण तेरी सब इन्द्रियाँ तेरे बस मे हैं, तेरे इंगित पर, तेरे इशारे पर ही कुछ भी कार्य करती हैं। जब तक तूं इन्हें आदेश नहीं देता, तब तक यह कुछ भी नहीं करतीं। इस कारण जीवन के तीनों काल, चाहे यह बाल्यकाल हो, चाहे यह यौवन का समय हो अथवा तेरे जीवन का स्थविर्भाव अर्थात बुढ़ापा का समय हो किन्तु जीवन में सोम का पान करने वाले, सोम का सम्भालने वाले अर्थात अपने शरीर में शक्ति रुपा वीर्य की रक्षा करने वाले ही ज्येष्ठता को पाते हैं, बड़े माने जाते हैं। जो जीव अपने जीवन में सोम की रक्षा कर लेते हैं वह ही उन्नत होते हैं, वह ही ब्राह्मण बनता है तथा जो ब्राह्मण होता है, वह ही ज्ञान से ज्येष्ठ बनता है अर्थात एसा व्यक्ति ही उन्नत ज्ञान को पा कर बडे व महान के रुप में समाज में पूज्य होता है। क्षत्रिय भी सोम रक्षक ही बनेगा। इस सोम के कारण वह भरपूर शक्ति का स्वामी हो जाता है तथा इस कारण ही वह बलवान क्षत्रिय की श्रेणी में आकर अपनी शक्ति के ही कारण सब का पूज्य बन जाता है। यह सोप ही वैश्य जनों का मूल आधार है। भाव यह है कि इस प्रकार सोम पर अधिपत्य रखने वालों में से ही विद्या का दान करने वाले ब्राह्मण बनते हैं, इनमें से ही देश को सम्भालने वाले क्षत्रिय निकलते हैं तथा इन में से ही धन अर्जन करने वाले, ऐश्वर्यों के स्वामी, सब प्रकार की समृद्धियों वाले वैश्य भी बनते हैं।

हम जानते हैं कि सब प्रकार से अग्रणी बनने का कारण यह सोम ही होता है। इसलिए हम इस सोम का पान करें, इस सोम को अपने शरीर में सम्भाल कर रखें।

पोट–1 प्लाट–61 प्रथमतल, रामप्रस्थ ग्रीन,
वैशाली–201010
गाजियाबाद (उ.प्र.) भारत
चलभाष–09718528068

विकासवाद एक अवैज्ञानिक कल्पना है

● रामनिवास 'गुण ग्राहक'

हमारा सुखद सौभाग्य है कि देश की सरकार में हमारी सत्य सनातन वैदिक संस्कृति के प्रबल पक्ष पोषक के रूप में माननीय सत्यपाल सिंह जी एक ऐसे पद पर आसीन हैं, जहाँ से उनकी आवाज पूरे देश और दुनियाँ में सुनी जा सकती है। आप सच्चे अर्थों में वैदिक धर्म के प्रति निष्ठावान हैं, खुले मन मस्तिष्क के धनी हैं, सत्य को दो टूक भाषा में कह डालने का आत्मबल हमारे हृदयों में वैदिक धर्म को लेकर ढेर सारी सम्भावनाओं को जगा देता है। ऐसा मैं पहली बार देख रहा हूँ कि सच्चे और सिद्धान्त निष्ठ ऋषि भक्त आर्य आप में एक सच्चे आर्य नेता की छवि देख रहे हैं। आप वैदिक मन्तव्यों को पूरी निर्भीकता से प्रकट करते रहो, उन्हें तार्किक, प्रामाणिक और युक्ति संगत ढंग से सत्य सिद्ध करने के लिए हम भरपूर प्रयास करेंगे। ऐसा करना हमारे लिए इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि इससे जहाँ वैदिक धर्म सम्बन्धी धारणाओं को बल मिलेगा, वहीं पूरी मानवता को वेद विद्या की सत्यता, प्रामाणिकता और सार्वभौमिकता के प्रति विश्वास बढ़ेगा। हम सीधे अपने विषय पर आते हैं। माननीय मंत्री महोदय ने डार्विन के विकासवाद की अप्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए कहा था कि मनुष्य बन्दर का संशोधित रूप नहीं है, वह सदा से मनुष्य के रूप में ही धरती पर पैदा हुआ है। विज्ञान के नाम पर देश की युवा पीढी को यह अवैज्ञानिक बात नहीं पढ़ाई जानी चाहिए। उन के इस कथन का कतिपय लोगों ने विरोध किया, यहाँ तक सरकार के स्तर पर भी ऐसे विषयों से बचने की राय दी गई।

डार्विन का विकासवाद प्रारम्भ से ही विश्वसनीयता की दृष्टि से सन्दिग्ध माना गया है। इसे आधार बनाकर विज्ञान के किसी क्षेत्र में कोई नए अनुसन्धान हुए हों ऐसा आज तक नहीं देखा गया कड़वा सच यह है कि योरोपीय बड़प्पन को बनाये रखने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि विकासवाद के नाम पर भारतीय संस्कृति की प्राचीनता को नकारा जाता रहे। भारतीय धर्म दर्शन साहित्य का स्पष्ट मानना है कि वेद मानव की पहली पीढ़ी को ईश्वर द्वारा प्रदान किया हुआ ज्ञान है। विकासवाद के द्वारा इस भारतीय अवधारणा को विज्ञान के नाम पर योरोप अस्वीकार करता रहा है। अगर पाश्चात्य लोगों के लिए विकासवाद इस हथकण्डे के रूप में काम न आता तो विज्ञान के क्षेत्र में वर्षों पूर्व इसे रद्दी की टोकरी में फेंक दिया होता। अब इस विकासवाद की अवैज्ञानिकता पर विचार करने से पहले पाठकों को यह बताना आवश्यक है कि विज्ञान के क्षेत्र में भी ऐसा बहुत कुछ चलता है, जिसकी विश्वसनीयता व प्रामाणिकता सुनिश्चित नहीं कही जा सकती। अमेरिका के प्रकृति विज्ञानी व विख्यात दार्शनिक डॉ. मैटिट स्टेनली कौंगडन लिखते हैं "विज्ञान यद्यपि परीक्षित ज्ञान का नाम है, परन्तु अब भी उसमें लोगों के मानसिक आपल्य, भ्रमों व यथार्थताओं का स्थान है। वह सम्भाव्यता से ही प्रारम्भ होता है और सम्भाव्यता पर ही समाप्त होता है, निश्चयात्मकता में नहीं।" अमेरिका के ही डॉ. मार्लिन ब्रुक्स क्रैडर के शब्दों में "विज्ञान के जो तथाकथित सिद्धान्त और तथ्य हैं, जिन्हें लोग सत्य मान लेते हैं, वे भी ऐसे तथ्य नहीं हैं जो सिद्ध किए गए हों। वे अपने आप में सुस्थापित तथ्य नहीं हैं।" मार्लिन ब्रुक्स तो इससे भी आगे बढ़कर यहाँ तक कह जाते हैं–"किसी भी वास्तविकता की सत्ता सिद्ध करने के लिए वैज्ञानिक विधि सर्वथा अपर्याप्त है। जैसे प्रेम मनुष्यों को प्रभावित करने वाली एक प्रबलतम् शक्ति है,....किन्तु वह वैज्ञानिक प्रमाण या विश्लेषण के बस की बात नहीं।" ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं जो चिल्ला–चिल्लाकर कहेंगे कि विज्ञान के क्षेत्र में सब कुछ उतना निश्चयात्मक व विश्वसनीय नहीं होता जितना कि हम प्रायः मान बैठते हैं। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में प्रचलित अवधारणाएँ कतिमय काल्पनिक प्रस्थापनाओं से अधिक कुछ नहीं कही जा सकती। कहने की आवश्यकता नहीं कि पाश्चात्य भाषा विज्ञान भी वैदिक प्रस्थापनाओं को झुँठलाने का प्रोपेगण्डा मात्र है।

अब हम चार्ल्स डार्विन के विकासवाद के सम्बन्ध में यह जानने का प्रयास करते हैं कि इसके सम्बन्ध में विज्ञानवादी क्या कहते है। सर्वप्रथम और सर्वाधिक प्रामाणिक बात तो यह कि चार्ल्स डार्विन के सहयोगी के रूप में विकासवाद पर काम करने वाले डॉ. रसेल वालेस ने प्रारम्भिक दिनों में ही विकासवादी अवधारणा को अपूर्ण और अप्रामाणिक बताया था। डार्विन के सहकर्मी द्वारा ही प्रश्न खडे करना जन्म क समय ही मृत्यु का प्रमाण पत्र देने जैसा ही है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि चार्ल्स डार्विन के पुत्र जार्ज डार्विन ने एक वैज्ञानिक सेमिनार में बोलते हुए कहा था कि जीवन के उद्भव का प्रश्न आज भी उतना ही अनसुलझा है, जितना वर्षों पूर्व था। अर्थात् एक कोशिकीय अमीबा से लेकर बन्दर और मानव तक की यह विकासवादी कल्पना जीवन के प्रादुर्भाव का प्रश्न सुलझाने में उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकी। ये दोनों कथन उन लोगों के हैं जो चार्ल्स डार्विन के जीवन से साक्षात् जुडे रहे हैं।

वंशानुकमविद् डॉ. वाल्टर एडवर्ड लैमटर्स अपने कुछ अनुसंधानों का हवाला देकर विकासवाद की स्थापित संकल्पनाओं के साथ अपने अनुसन्धानों की विवेचना करते हुए बड़े विश्वास के साथ विकासवादी अवधारणाओं का खण्डन करते हुए निष्कर्षतः लिखते हैं "यदि स्थान सीमित न होता तो यह बताने के लिए और अधिक तथ्य उपस्थित किए जा सकते थे कि प्राणधारियों की दुनियाँ में हम जो अन्तर देखते हैं, उनकी व्याख्या जड़वादी विकास के सिद्धान्तों से नहीं की जा सकती। ये अन्तर स्पष्ट रूप से उस विशिष्ट बुद्धिमान सृष्टा (परमात्मा) की ओर संकेत करते हैं।" वाल्टर एडवर्ड का यह कथन विज्ञान की मूलभूत संकल्पनाओं को चुनौती देता हुआ दिख रहा है। ब्रह्माण के निर्माण में परमात्मा की भूमिका को नकारने वाले जड़वादी सिद्धान्तों की जडें उखाडने का काम करने वाले डॉ. वाल्टर एडवर्ड अकेले वैज्ञानिक नहीं हैं। कनाडा की रॉयल सोसायटी के स्वर्ण पदक विजेता ख्यात वैज्ञानिक डॉ. फ्रेंक एलन, डॉक्टर अमस डेविस पार्क्स से लेकर डॉ. अस्कर लियो, दार्शनिक बेकन और लुई पाश्चर जैसे विख्यात वैज्ञानिक सृष्टि के निर्माण को परमात्मा की रचना मानते हैं। लुई पाश्चर के शब्द देखें–'आगे आने वाली सन्तति आधुनिक प्रकृतिवादी दार्शनिकों की मूर्खता पर हँसेगी। जितना अधिक मैं प्रकृति का अध्ययन करता हूँ, मैं परमेश्वर के कार्यों को देखकर आश्चर्यचकित होता हूँ।' आज के विज्ञानवादी इन तथ्यों पर गम्भीरता से विचार करें।

मूल रूप से हम विकासवाद की वैज्ञानिक अवधारणा की निस्सारता और अवैज्ञानिकता सिद्ध करने चले हैं। डार्विन की विकासवादी अवधारणा संसार के बनने में ईश्वर की भूमिका स्वीकार नहीं करती। अभी कुछ वर्ष पूर्व प्रसिद्ध विज्ञानी डॉ. हाकिंग का वह कथन भी चर्चा का विषय बना था कि ब्रह्माण्ड के निर्माण में किसी ईश्वरीय सत्ता की कोई आवश्यकता या भूमिका नहीं। यह भी पाश्चात्य लोगों का विज्ञान के क्षेत्र में एक बड़ा ज्ञान–घोटाला है। न्यूटन ऐसे अनीश्वर वादियों से एक प्रश्न पूछता है–"क्या कारण है कि प्रकृति कोई काम व्यर्थ नहीं करती?" इसका उत्तर देते हुए–यूटन लिखते हैं–'एक निराकार, चेतन–बुद्धिमान, सर्वव्यापक है, जो सब वस्तुओं को यथार्थ रूप में सम्पूर्णता से देखता और अन्तर्यामी रूप से ठीक–ठीक जानता है।' कोई तो कारण है कि देश विदेश के वैज्ञानिक लुई पाश्चर और न्यूटन जैसे महान वैज्ञानिकों के ईश्वर विषयक कथनों की निरन्तर अनदेखी करते चले आ रहे हैं। इस पर कभी फिर लिखेंगे, यहाँ तो हम विकासवाद को शीर्षासन कराने वाले कुछ वैज्ञानिक कथन देकर लेख पूरा करना चाहते हैं।

ब्रिटिश म्यूजियम के अध्यक्ष रहे डॉ. ऐथ्रिज कहते हैं–"इस ब्रिटिश म्यूजियम में एक भी कण ऐसा नहीं है, जो यह सिद्ध कर सके कि जातियों में परिवर्तन हुआ है।..संसार भर में कोई भी ऐसा सामान नहीं जो विकासवाद की सहायता करता हो।" भारत के विश्वविख्यात वनस्पतिशास्त्र विशेषज्ञ बीरबल साहनी से किसी ने प्रश्न किया कि प्रारम्भ में जीवन कहाँ से आया और ज्ञान कहाँ से आया? उन्होंने उत्तर दिया "इसके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं कि आरम्भ में जीवन या ज्ञान कहाँ से आया। हम यह मानकर चलते हैं कि आरम्भ में कुछ जीवन भी था और कुछ ज्ञान भी था।" सुधीपाठक स्वयं निर्णय करें कि जीवन और ज्ञान के प्रति सर्वथा अनभिज्ञ विज्ञान विकास वाद की विश्वसनीयता कैसे सिद्ध आयेगा। विकासवाद प्रारम्भ में एक कल्पना मात्र था और आज भी कल्पना मात्र ही है। श्री सत्यपाल सिंह जी को इसके लिए समस्त आर्य जगत् की ओर से हार्दिक धन्यवाद कि उनकी साहसिक सत्यनिष्ठा ने विकासवाद को उसका स्थान दिखा दिया। आर्य समाज विकासवाद को तर्कपूर्ण, तथ्यपूर्ण व वैज्ञानिक विधि से डंके की चोट अस्वीकार करता है।

मो. 7597894991

☞ पृष्ठ 03 का शेष

तीन सन्धियों से गुज़रने...

भोगने के बाद वानप्रस्थी बनकर आगे बढ़ना अपेक्षित है। इस प्रकार गृहस्थ भी मानों अगले आश्रम अर्थात् वानप्रस्थ होने की तैयारी मात्र ही है। वानप्रस्थी बनकर व्यक्ति को पूरी तरह परोपकार के कार्यों में लग जाना चाहिए। वानप्रस्थ होकर व्यक्ति का जीवन तपोमय होना जरूरी है तभी वह स्वयं को परोपकार के कार्यों में लगा सकेगा।

वानप्रस्थी की मर्यादाओं और कर्त्तव्यों के बारे में कहा गया है कि स्वाध्याय अर्थात् पढ़ने–पढ़ाने से नित्य युक्त, जितात्मा, सबका मित्र, इन्द्रियों का हमनशील, विद्यादि का दान देनेहारा, और सब पर दयालु किसी के कुछ भी पदार्थ न लेवे। इस प्रकार सदा वर्तमान करे। शरीर के सुख के लिए अति प्रयत्न न करे, किंतु ब्रह्मचारी रहे, अर्थात् अपनी स्त्री साथ हो तथापि उससे विषय–चेष्टा कुछ न करे। भूमि में सोवे, अपने आश्रित वा स्वकीय पदार्थों में ममता न करे, वृक्ष के मूल में बसे। श्रद्धा और आस्था के साथ अपने धर्मानुष्ठान में लगकर परमात्मा की भक्ति करने वाला ही वानप्रस्थी होता है। उपनिषद् का कथन (मुण्ड 01–2–11) है–जो शांत, विद्वान लोग वन में तप–धर्मानुष्ठान और सत्य की श्रद्धा करके भिक्षाचरण करते हुए जंगल में वसते हैं, वे जहां नाशरहित, पूर्णपुरुष, हानि–लाभ रहित परमात्मा है वहां निर्लेप होकर प्राणद्वार से उस परमात्मा को प्राप्त होके आनन्दित हो जाते हैं। वानप्रस्थ को उचित (यजु. 20–24) है कि –'मैं अग्नि में होम कर, दीक्षित होकर, व्रत सत्याचरण और श्रद्धा को प्राप्त होऊँ, ऐसी इच्छा करके वानप्रस्थ हो नाना प्रकार की तपचर्या, सत्संग, योगाभ्यास, सुविचार से ज्ञान और पवित्रता प्राप्त करे।'

इस प्रकार वानप्रस्थी को कन्दमूल का सेवन एवं पंच महायज्ञों का पालन करना जरूरी कर्त्तव्य बताया गया है। नित्य स्वाध्याय करना, जितेन्द्रिय रहना, सब प्राणियों के साथ मित्रता, इन्द्रियों का दमन करना, विद्या–शिक्षा आदि गुणों का दान सब पर दया का भाव रखना, शरीर सुख से विमुखता एवं ब्रह्मचर्य का पालन, राग, द्वैष, मोह आदि विकारों से दूर रहकर विद्या–शिक्षा आदि का निःशुल्क दान वानप्रस्थी द्वारा करना अपेक्षित है। उसका जीवन पूर्णरूप से त्याग और सादगी से भरा होता था क्योंकि वह क्रमिक विकास के तीसरे पड़ाव में पहुंचा होता है अतः यहां तक आते–आते उसमें विशेष प्रकार के वैराग्य के गुणों का प्रस्फुटन होता था ताकि वह पूर्ण रूप से चौथे आश्रम में प्रवेश कर सके। जैसा कि पहले कहा गया है कि ब्रह्मचर्य आश्रम से प्रारंभ होकर आगे के आश्रम क्रमशः व्यक्ति को पूर्णता की ओर ले जाने वाले होते हैं तथा इसीलिए जीवन को सफलता का आयाम देने के लिए उसे अधिक से और अधिक तप तथा प्रयास करना पड़ता है। वानप्रस्थ के रूप में पूरी तरह तपने के बाद वह चतुर्थ आश्रम में सहजता से प्रवेश करता था।

वानप्रस्थ–आश्रम भी मानव जीवन को पूर्णता देने के लिए एक पड़ाव ही था। इसके बाद उसे अंतिम अर्थात् तीसरी सन्धि के रूप में संन्यास आश्रम में प्रवेश करना होता था। संन्यासी वास्तव में समाज में सर्वोपरि होता था। महर्षि जी ने इस सम्बन्ध में यहां तक कहा है कि–'जैसे सम्राट चक्रवर्ती राजा होता है, वैसे परिव्राट् संन्यासी होता है। प्रत्युज राजा अपने देश में वा स्वसम्बन्धियों में सत्कार पाता है, और सन्यासी सर्वत्र पूजित होता है। इस सम्बन्ध में कहा गया है कि (चाणक्य नीति शास्त्र) 'विद्वान और राजा की कभी तुल्यता नहीं हो सकती, क्योंकि राजा अपने राज्य में ही मान और सत्कार पाता है, विद्वान सर्वत्र मान और प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है।' संन्यासी की इस श्रेष्ठता के पीछे उसकी योग्यता को ही आधार माना जा सकता है अन्यथा आज भी कई प्रकार के तथाकथित भगवे वस्त्रधारी गलियों में लोगों को मूर्ख बनाते हुए फिरते रहते हैं.... अतः केवल वस्त्रों का बल लेना भर ही संन्यासी हो जाना नहीं है बल्कि जैसे ब्रह्मचारी, गृहस्थ और वानप्रस्थ के गुण, कर्म, स्वभाव बताए गए हैं वैसे ही संन्यासी के भीतर भी कुछ विशेष योग्यताओं का होना अपेक्षित है तभी वह सच्चा संन्यासी बन सकता है। पच्चहतर वर्ष की आयु पूर्ण हो जाने पर व्यक्ति को पूर्णतः परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाना चाहिए। भगवे वस्त्र इसीलिए पहने जाते हैं क्योंकि ये ब्रह्माग्नि के प्रतीक हैं। संन्यासी बनने के बाद व्यक्ति किसी प्रकार की सीमाओं में न बंधकर वह पूरे संसार का हो जाता था। वह पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकेषणा से उपर उठकर पूर्णरूप से पावन पवित्र हो जाता था। इसीलिए योग्यता के आधार पर केवल ब्राह्मण को ही संन्यासी होने का निर्देश दिया है। जब तक हमारे समाज में इस प्रकार के निस्पृह, परोपकारी, जितेन्द्रिय और विद्यावान् संन्यासी थे तब तक हमारा समाज सुख और शांति का घर था मगर आज ऐसे उच्च संन्यासियों के अभाव के कारण ही व्यक्ति, परिवार, समाज और देश दुःखी है। इसलिए आज भी इस प्रकार के संन्यासियों की जरूरत है ताकि हम पुनः अपनी सुख–शांति और समृद्धि को प्राप्त कर सकें।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि यह वैदिक आश्रम व्यवस्था पूर्णतया वैज्ञानिक, सर्वकालिक, सार्वभौमिक और व्यक्ति व समाज के सुख का आधार है। यह एक ऐसी अद्वितीय व्यवस्था है जिसके द्वारा व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उन्नति के शिखर पर पहुंच सकता है और वास्तव में ऐसे व्यक्ति को ही हम सुक्रतु कह सकते हैं क्योंकि वह किसी का अहित कर ही नहीं सकता। वैदिक आश्रम ने व्यक्ति को व्यक्तिगत उन्नति के साथ–साथ समाज और राष्ट्र के प्रति उसकी सांझेदारी सुनिश्चित की है और साथ ही उनके उत्तरदायित्व सुनिश्चित किए हैं। इसके साथ–साथ इस पद्धति में भौतिकता और आध्यात्मिकता का अद्भुत सम्मिश्रण है। वैदिक आश्रम व्यवस्था की सर्वाधिक विशेषता इसके त्यागभाव में निहित है। दान एवं परोपकार की भावना तथा सम्पत्ति का भोग बांटकर करना इसका उत्कृष्टतम स्वरूप है। धार्मिकता का अंकुश निरंतर इसे स्वेच्छाचारिता से मुक्त करता है। इसलिए यह ध्रुव सत्य है कि वैदिक आश्रम व्यवस्था में ही समाज का समग्र सुख निहित है।

महर्षि दयानन्द धाम महादेव,
सुन्दरनगर–174401 (हि. प्र.)

डी.ए.वी. सेक्टर–49, गुरुग्राम में हुआ 'नेशनल डीवार्मिंग डे' का आयोजन

'नेशनल डीवार्मिंग डे' (कृमिहरण दिवस) 10 फरवरी 2018 को पूरे भारत में मनाया गया। इस उपलक्ष्य में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर–49 गुरुग्राम में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत कक्षा प्री नर्सरी से लेकर 12वीं तक के सभी विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों की उपस्थिति में पेट के कीड़े मारने की दवाई (एल्बेन्डाज़ोल) दी गई।

पेट में कीड़े होने के कारण बच्चों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है–जैसे – चिड़चिड़ापन, पेट में दर्द, एकाग्रता की कमी, कमज़ोरी आदि।

इन सभी समस्याओं से मुक्ति दिलाने के लिए भारत सरकार के द्वारा सभी सरकारी संस्थाओं तथा गैर सरकारी विद्यालयों में यह सुविधा उपलब्ध कराई गई है ताकि हम एक कृमि मुक्त भारत का निर्माण कर सकें।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती चारु मैनी, के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी विद्यार्थियों में 'हेल्थ बुलेटिन' बँटवाए गए और उन्हें इस विषय के प्रति और जागरूक करने के लिए वीडियो भी दिखाई गई। कार्यक्रम के आयोजन को लेकर अभिभावकों की प्रतिक्रिया बहुत अच्छी रही। विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए विद्यालय द्वारा उठाए गए इस कदम को लेकर वे काफी प्रसन्न और उत्साहित नज़र आए।

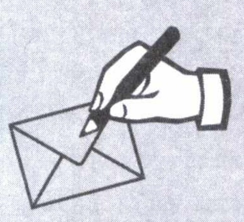

पत्र/कविता

सही सम्मान तभी होगा

महाराष्ट्र के भीमा–कोरे गाँव में जातिवाद के नाम पर जो संघर्ष हुआ वह किसी भी मायने में सही नहीं है। आज भारत में जातिवाद के नाम पर लोगों को भड़काया जा रहा है। इस प्रकार की घटनाएँ भारत के आपसी भाई–चारे प्रेम, सौहार्द को बिगाड़ती हैं। भीमा–कोरेगाँव में आयोजित विजय दिवस विगत 100 वर्षों से मनाया जाता है। डॉ. अम्बेडकर ने सन् 1927 में इस स्थल का भ्रमण किया था। उनके भ्रमण के कारण यह स्थान दलितों के लिए एक तीर्थ स्थान जैसा हो गया। लेकिन तब जातिवाद के नाम पर रोटियाँ सेकने वाले नेताओं की एक नहीं चली तथा यह मामला शाँत हो गया था।

भारत में दलित विमर्श के जनक ज्योतिबा फूले ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के विद्रोह को असफल हो जाने पर पुणे में सार्वजनिक रूप से महार सैनिकों का सम्मान किया था।

दलितों के नाम पर संविधान की दुहाई देकर राजनीति करने वालों को समझना चाहिए संविधान में दलित शब्द का प्रयोग नहीं है। दलित का अर्थ है पीड़ित शोषित, दबा हुआ, खिन्न, उदास, टुकड़ा, खंडित, रौंदा हुआ, जिसे अस्पृश्य समझा जाता हो। इस प्रकार की सैकड़ों जातियों को अनुसूचित जाति में रखा गया है। संविधान में अनुसूचित जाति शब्द का प्रयोग है न कि दलित शब्द का। दलित तो किसी भी वर्ग, समाज, जाति में हो सकता है। आज जातिवाद के नाम पर समाज को बाटकर राजनैतिक रोटियाँ सेकी जा रही हैं। यदि जातिवाद को खत्म करना है वैदिक मान्यताओं को अपनाना होगा वर्ण व्यवस्था को अपनाना होगा कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था जातिवाद से ठीक विपरीत व्यवस्था है। जातिवाद के झगड़ो से निकलकर समाज को सुदृढ़ एवं सभ्य समाज बनाने का प्रयास करना चाहिए। समाज सुधारकों, विद्वानों, देशभक्तों को जाति में बांधकर उनका अपमान न करें। क्योंकि वह समस्त समाज के लिए कार्य करते हैं। वो जाति से उठकर देश के लिए कार्य करते हैं। उनका सही सम्मान तभी होगा जब हम समाज में एक समानता पैदा करें।

सोमेन्द्र सिंह "अधाना"
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

****

मेरा भारत महान

सुभाष शिवाजी का भारत, गंगा कावेरी का भारत
घाटी पहाड़ों का भारत, केसर क्यारी का भारत
राम रहीम कृष्ण का भारत, शकुन्तल नारी का भारत
अनेक रिवाजों का भारत, खिली फुलवारी का भारत
युग पुरुषों की खान है
मेरा भारत महान है।

पर्व बिहू ओनम लोहिड़ी, त्यौहार होली दीवाली
नृत्य घूमर गिद्दा, मेला कुम्भ गणपति काली
मंत्र ओम शिवा णमोकार, इष्ट अनगिनत देव देवी
खुशी ईद राखी गणगौर, मस्ती सावन की हरियाली
चिर संस्कृति की शान है
मेरा भारत महान है।

संस्कारों की रतियाँ ढ़लती, भ्रातृत्व की कलियाँ खिलती
मानवता का संदेश लिए, दया धर्म की नदियाँ बहती
साधु संतों की वाणी में, गीत भजन से दुनियाँ जगती
दादी माँ की लोरी से, रोज सपन में परियाँ मिलती
वतन की यह पहचान है
मेरा भारत महान है।

प्राय चौपालों में चलती, चकवा चकवी की बातें
धवल चांदनी में जगती, थार मरूस्थल की रातें
परियाँ धरा पर उतरती, देव पर्यटन को आते
मोर पपैया तोता मैना, मनमोहक राग सुनाते
झूमता सारा जहान है
मेरा भारत महान है।

भाषा बोली अलग अलग, अलग जाति धर्म परिधान
किसी को प्यारा वेद ग्रंथ, किसी को गीता और कुरान
कोई मक्का को जाता, कोई करता गंगा स्नान
दुनियाँ भर की विविधता, लेकिन मंजिल एक समान
वंदेमातरम् गान है
मेरा भारत महान है।

दिलचस्प
चूरू–331001
राजस्थान

जिहादी जनून से जलता कश्मीर

क्या यह उचित है कि दुश्मन के छद्म युद्धों का सिलसिला बना रहे और हम उसे कायराना हमला कहकर निंदा करके अपने दायित्वों से भागते रहें? यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है जम्मू में सेना की सुंजवां ब्रिगेड पर हुए जैश–ए–मोहम्मद के आतंकियों के हमले को अभी नियंत्रित भी नही कर पाये थे श्री नगर में सीआरपीएफ की 23वी वाहिनी के मुख्यालय पर लश्करे–ए–तैयबा के आतंकवादियों ने भी ऐसा ही असफल प्रयास किया। यह दोनों आतंकी घटनायें हमारी सेना व सुरक्षाबलों की जान–माल को भारी क्षति पहुचानें के लिए की गई और ये आतंकवादी शनिवार से मंगलवार दोपहर तक हमारी सुरक्षा व्यवस्था की चूकों का लाभ उठाते रहें।

आज देश का प्रत्येक नागरिक पाकिस्तानियों व उनके रहस्यमय दूतों के आक्रमणों से अत्यधिक दुखी हैं। पिछले कुछ वर्षो से तो ये जिहादी हमारे सैन्य व पुलिस ठिकानों को लक्ष्य बना कर निसंकोच हानि पहुँचा रहे हैं। सीमाओं पर प्रति वर्ष सैकड़ों बार होने वाला युद्धविराम उल्लंघन एवं आतंकवादियों की घुसपैठ भी हमको शर्मसार करती आ रही हैं। भारत जैसे शक्तिशाली राष्ट्र का मुकुट जम्मू कश्मीर कब तक जिहादी जनून से जलता रहेगा?

विचार करना होगा हमारे शूरवीर सैनिक अब कब तक धैर्य रखेंगे? आज भी पाकिस्तानी सेना व उसके आतंकियों में भारतीय सेना की इस आक्रामक नीति का कोई भय नही, तभी तो वे बार–बार हमारे क्षेत्रों में अकारण आक्रमण करते रहने की अपनी जिहादी नीतियों में कोई परिवर्तन नही कर रहें हैं। ऐसी स्थिति में जब हमारे सैनिक व आम नागरिक शत्रुओं की कुटिल चालों से बलिदान हुए जा रहें हैं तो इन दुश्मनों से प्रतिशोध लेने के लिए कोई आक्रामक नीति तो हमें पुनः अपनानी ही चाहिए?

सेना के शिविरों और सीमाओं पर बार–बार होने वाले आतंकी हमलों के पीछे छुपे देशद्रोही भेदियों व उनके साथियों को भी को ढूंढना होगा, क्योंकि बिना किसी गुप्त सूचनाओं के कोई बाहरी शत्रु व घुसपैठिये इतना दुःसाहस नहीं कर सकता कि वह सेनाओं के सतर्क व अतिसुरक्षित क्षेत्रों को ही निशाना बनाने में सफल हो जायें। संकटकालीन स्थिति में हमारी सुरक्षा व्यवस्था की त्रुटियों का विश्लेषण अवश्य होता होगा और उसके उपाय भी विशेषज्ञों द्वारा सुझाये जाते होंगे फिर भी हम आहत होते रहें तो क्या इस पर राष्ट्रीय चिंतन नही होना चाहिए? अब और अधिक धैर्य व संयम युद्धकालीन रणनीतिक कौशल के अभाव का नकारात्मक संकेत देगा?

विनोद कुमार सर्वोदय
गाज़ियाबाद
gupta vinod038@gmail.com

****

अलवर में ऋषि जन्मोत्सव पर निकाली भव्य शोभा यात्रा

वैदिक विद्या मंदिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में महर्षि दयानन्द सरस्वती का 194वाँ जन्म दिवस अत्यन्त धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 8:30 बजे भव्य यज्ञशाला में यज्ञ से हुआ।

निदेशक श्रीमती कमला शर्मा एवं विद्यालयी छात्राओं कु. सेजल व कु. अनामिका ने वैदिक परम्परानुसार मुख्य अतिथि माननीय डॉ. करण सिंह यादव, सांसद अलवर तथा अन्य आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया। विद्यालयी बैंड ने मुख्य अतिथियों का सलामी दी।

छात्र-छात्राओं द्वारा जूडो कराटे तथा जिम्नास्टिक के आकर्षक करतब दिखाए गए। समिति प्रधान जगदीश प्रसाद गुप्ता के नेतृत्व में माननीय डॉ. करण सिंह यादव, सांसद अलवर ने ओ३म् ध्वज दिखाकर तथा रंग बिरंगे गुब्बारे आकाश में छोड़कर शोभा यात्रा को प्रारंभ किया गया।

भव्य शोभा यात्रा में विद्यालयी बैंड पन्द्रह आकर्षक झांकियों से ज्वलंत मुद्दों पर विद्यालय की छात्राओं द्वारा – जिनमें 'शहीदे आजम' 'देवयज्ञ' पर्यावरण संरक्षण, Social Networking and our youth, 'गौ हत्या, E-Waste Management, 'बाल विवाह निषेध' 'पाखंडी बाबाओं का आडम्बर' 'कन्या भ्रूण हत्या' 'ग्लोबल वार्मिंग' 'रक्तदान महादान' का संदेश दिया गया।

शोभा यात्रा के मार्ग में 51 स्वागत द्वार बनाए गए। शोभा यात्रा वैदिक विद्या मंदिर स्वामी दयानन्द मार्ग से प्रारंभ होकर नगर के प्रमुख मार्गों स्वामी दयानन्द मार्ग, मन्नी का बड़, पंसारी बाजार, होपसर्कस, बजाजा बाजार, विवेकानन्द चौक व बस स्टैण्ड से होती हुई वापिस विद्यालय पहुँची।

शोभा यात्रा के पश्चात् विद्यालय प्रांगण में लगभग 4000 छात्राओं, अतिथियों धर्मप्रेमी बन्धुओं तथा कर्मचारियों ने सामूहिक भोज (लंगर) किया। अतिथियों को विद्यालय समिति द्वारा कलैण्डर भेंट किए गए।

कोटा में स्वामी दयानन्द आवासीय योजना पर आभार व्यक्त किया गया

नगर विकास न्यास द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम पर आवासीय योजना लाने पर आर्य समाज की ओर से न्यास चैयरमेन और अधिकारियों का आभार व्यक्त किया गया है। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता, डी.ए.वी. की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम, प्रेमनाथ कौशल, अमरलाल गहलोत, रामनारायण कुशवाह, रामदेव शर्मा, आर्य पुरोहित श्योराज वशिष्ठ, लालचन्द आर्य के प्रतिनिधिमण्डल ने न्यास चैयरमेन रामकुमार मेहता तथा सचिव आनन्दलाल वैष्णव का अभिनन्दन कर धन्यवाद व्यक्त किया।

इस दौरान मेहता को राजस्थानी साफा पहनाकर तथा मोतियों की माला, दुशाला ओढाकर अभिनन्दन किया गया। स्वामी दयानन्द सरस्वती का चित्र भी भेंट किया गया तथा सचिव आनन्दीलाल वैष्णव को श्रीफल भेंटकर ओम् का पटका ओढाया।

प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि पिछले दिनों न्यास अध्यक्ष से मिलकर आवासीय योजना का नामकरण स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से करने का आग्रह किया गया था। जिसे न्यास प्रशासन ने स्वीकार करते हुए आवासीय योजना का शुभारंभ भी कर दिया है। उन्होंने बताया कि न्यास द्वारा इससे पूर्व भी शहर में जवाहर नगर की मुख्य सड़क का नामकरण स्वामी दयानन्द सरस्वती मार्ग के नाम पर किया जा चुका है।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ...

डॉ. पी बी कन्न कुमार भी अन्तिम दिन निर्णायक बनें। प्रतियोगिता में पिछले वर्ष से अधिक कड़ा मुकाबला देखने को मिला। सर्वसम्मति से निम्न प्रतियोगियों को पुस्कृत किया गया।

प्रथम पुरस्कार श्री नीलान्जन मित्रा, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एन आई टी आदित्यपुर, जमशेदपुर, द्वितीय पुरस्कार सुश्री रंजना चटर्जी, डी.ए.वी. इन्टरनेशनल स्कूल, खारघर, नवीं मुम्बई तथा तृतीय पुरस्कार श्री राधाबल्लभ सक्सेना, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर को मिला। इसके अतिरिक्त श्री नरेन्द्र कुमार, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लारेंन्स रोड, अमृतसर, श्री तुलसीदान वर्मा, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, तलवण्डी, कोटा, श्री कौस्तुभ दत्तात्रेय आप्टे, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, तुलसीधाम, थाणे, तथा श्री अश्विनी शर्मा, एस बी पी डी.ए.वी. सैन्टीनरी पब्लिक स्कूल, फतेहाबाद (हरियाणा) को सान्त्वना पुरस्कार दिया गया।

सभा की ओर से विजेताओं में प्रथम को 11,000/- रु. द्वितीय आने वाले को 7,500/- रु. तृतीय आने वाले को 5,000/- रु. तथा चार प्रतियोगियों को सान्त्वना पुरस्कार स्वरूप 3,000/-रु. प्रति व्यक्ति प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त पहले 31 प्रतियोगियों को 2000/- की राशि प्रति व्यक्ति प्रदान की गई। श्री प्रबोध महाजन, उपप्रधान-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने विजेताओं को पुरस्कृत किया।

संगीत संगोष्ठी में आर्य समाज (अनारकली), आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के अधिकारी श्री रामनाथ सहगल, ब्रि ए के अदलखा, श्री सत्यपाल आर्य, प्रिंसिपल मोहन लाल, श्री चन्द्रमोहन खन्ना, श्री एस एम गुप्ता, श्री अजय सहगल आदि ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

डी.ए.वी. सेक्टर-14, फरीदाबाद

तत्पश्चात् ऋषि स्तवन के भजन गाए गए। साथ ही अध्यापिकाओं व अन्य शिक्षकों ने ऋषिवर दयानन्द के मानव जाति पर किए गए उपकारों को याद किया।

अन्त में विद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेन्द्र सिंह चौधरी ने ऋषि दयानन्द को याद करते हुए उन्हें युगप्रवर्तक बताया साथ ही ऋषिवर के नाम पर स्थापित डी.ए.वी. विद्यालयों द्वारा किए गए उपकारों का वर्णन किया।

प्राचार्य जी ने महर्षि दयानन्द को सबसे बड़ा वेदज्ञ व समाज सुधारक बताते हुए उन्हें आधुनिक समाज का महारत्न बताया।

अन्त में शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस उपलक्ष्य में पूरे नगर ने शुभकामना वाले बैनर लगाए गए जिसका लोगों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-19
Posted at N.D.P.S.O. ON 21/22-02-2018

डी.ए.वी. स्कूल पिहोवा में बाँटे गए वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के पुरस्कार

डी.ए.वी. स्कूल पिहोवा में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। खेलकूद प्रतियोगिता के बारे में जानकारी देते हुए स्कूल के प्रधानाचार्या श्री एन. सी. बिंदल ने बताया कि स्कूल के विद्यार्थियों की विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे 100 मी. रेस, 200 मी. रेस, 400 मी. रेस, 800 मी. रेस, 1500 मी. रेस, 3000 मी. रेस, लॉन्गजम्प, हाईजम्प, शॉटपुर, डिस्कसथ्रो, भाला फैंक तथा 4*100 मी. रिले दौड़ लड़के लड़कियों के वर्ग सब जूनियरग्रुप, अंडर–14 ग्रुप, अंडर–17 ग्रुप, वअंडर–19 ग्रुप में करवाई गई। प्रतियोगिताओं में लगभग 1300 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसमें

से 275 विद्यार्थियों ने प्रथम, द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त किए।

इस समारोह में पुरस्कार वितरण के लिए मुख्यअतिथि के रूप में श्री महेश चोपड़ा (कोषाध्यक्ष, डी.ए.वी. सी.एम.सी. दिल्ली) विशेष रूप से पधारे। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जी ने दीप प्रज्वलित करके किया।

स्कूल के छात्र–छात्राओं ने एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसे देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। बच्चों ने हरियाणवी, राजस्थानी, गिद्दा, भंगड़ा, बंगालीडांस, वेस्ट्रनडांस आदि प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए बच्चों को ढेर सारी शुभकामनाएँ दी। उन्होंने बच्चों की सभी प्रस्तुतियों को खूब सराहा और स्कूल कि सभी गतिविधियों कि भूरि–भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम के अंत में मुख्यअध्यापक ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर स्कूल के मैनेजर डॉ. के.डी. झा., स्कूल के चेयरमैन श्री एस. डी. मुरार, अभिभावक तथा स्कूल स्टाफ मौजूद रहा।

साईं दास स्कूल जालन्धर में लाला लाजपतराय जी की जयन्ती के अवसर पर हुआ वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह

साईं दास ए.एस. सी. सै. स्कूल, पटेल चौक, जालन्धर, (पंजाब) में शेर–ए–पंजाब लाला लाजपतराय जी की जयन्ती एवं वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह अत्यन्त हर्षोल्लास से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता आदरणीय श्री अरविन्द घई सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली एवं प्रधान स्कूल प्रबन्धकर्त्री समिति के द्वारा की गयी। स्कूल के पूर्व छात्र श्री चन्द्र मोहन जी समारोह के मुख्य अतिथि बने। श्री जे. पी. शूर डायरैक्टर, एडिड स्कूल, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली ने भी समारोह की शोभा को बढ़ाया।

समारोह का शुभ आरम्भ ज्योति प्रज्ज्वलन एवं डी.ए.वी. गान से किया गया।

इस शुभ अवसर पर छात्रों ने पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी के जीवन तथा नारी सशक्तिकरण से सम्बधित रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

स्कूल के प्रधानाचार्य श्री रोशन लाल अरोड़ा द्वारा सभी अतिथियों का हार्दिक अभिनन्दन किया एवं स्कूल की विभिन्न उपलब्धियों से अवगत कराया। श्री जे. पी. शूर ने लाला लाजपतराय जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को उनके जीवन से प्रेरणा लेने का अनुरोध किया।

समारोह के अंत में डॉ. अजय सरीन, (एच.एम.वी. कॉलेज) मैनेजर, स्कूल प्रबन्धकर्त्री समिति ने समस्त अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

बाबा बीरम दास डी.ए.वी. चनारथल खुर्द में हुआ वैदिक यज्ञ तथा भजन-प्रवचनों का आयोजन

बाबा बीरम दास डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल चनारथल खुर्द, जिला फतेहगढ़ साहिब में मकर सक्रांति व लोहड़ी के अवसर पर नवीन पुस्तकालय में वैदिक यज्ञ तथा भजन–प्रवचनों का आयोजन किया गया जिस से वातावरण पूर्णतया अध्यात्मिक व पूरा परिसर पवित्र हो गया। इस कार्यक्रम में सभी विद्यार्थियों तथा स्टाफ ने भाग लिया।

इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा भजन, प्रवचन, गीत तथा कविताएँ सुनाई गईं तथा लघु नाटिका प्रस्तुत की गई।

विद्यालय की जमीन लीज पर मिलने के उपरान्त तीन बड़े कमरों का निर्माण किया गया। यह निर्माण विद्यालय को आने वाले समय में और उन्नति तथा प्रगति के पथ पर ले जाए ऐसी प्रभु से कामना की गई।

प्रधानाचार्य श्री पंकज कौशिक ने सभी को मकर सक्रांति व लोहड़ी की बधाई दी तथा विस्तार से बताते हुए कहा कि मकर सक्रांति के अवसर पर उत्तरायण का प्रारम्भ होता है जो कि हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर धार्मिक कृत्य करने से हमें बल प्राप्त होता है जिससे हम अनुशासन में रहते हुए कर्तव्य पालन करके उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**